वाणी

भावों की अभिव्यक्ति

बिरला प्रौद्यौगिकी एवं विज्ञान संस्थान, पिलानी

BIRLA INSTITUTE OF TECHNOLOGY & SCIENCE
PILANI – 333031 (RAJASTHAN), INDIA

प्रो॰ लक्ष्मीकांत माहेश्वरी
कुलपति

12-04-2007

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष है कि हिन्दी प्रेस क्लब की वार्षिक पत्रिका " वाणी **2007**" का प्रकाशन शीघ्र ही होने जा रहा है। पत्रिका सम्पादक दल के कई महीनों के परिश्रम का प्रतिफल है।तदर्थ मैं संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि पत्रिका छात्रों की रचनात्मक अभिव्यक्ति हेतु एक सफल मंच प्रदान करती रहेगी।

लक्ष्मीकांत माहेश्वरी

सम्पादकीय

काफी अन्तराल के बाद वाणी का यह नवीन अंक आप तक पहुँच रहा है। बतौर सम्पादक ये मेरे लिए अत्यन्त हर्ष का विषय है कि पत्रिका पाठकों तक इतने सुन्दर रूप में पहुँच रही है, पर वाणी से विलग होने का दुख अवश्य है। विगत तीन वर्षों में वाणी के प्रकाशन के साथ जुड़े कई यादगार पल मानस पटल पर अमिट रहेंगे। खैर परिवर्तनों की बहती धारा में वाणी की रूपरेखा में भी अनेक परिवर्तन हुए हैं और वाणी के प्रकाशन को अर्द्धवार्षिक के स्थान पर वार्षिक कर देने के कारण ही पत्रिका पूरे एक साल के बाद आप तक पहुँच रही है। इसके चलते पृष्ठ संख्या में वृद्धि तो स्वाभाविक ही है पर इस वर्ष लेखों में विविधता भी बढ़ी है।

पाठकों की रचनाओं को, वार्षिक घटनाक्रम पर हाँलाकि प्राथमिकता दी है पर फिर भी हमारा पूरा प्रयास रहा है कि वर्ष भर में हुए सभी यादगार पलों को समेट सकें। और पत्रिका का एक अच्छा अंश इस हेतु समर्पित है। भाषा को लेकर मेरी दृष्टि अपेक्षाकृत उदार रही है और इसके चलते वाणी की भाषा सरल ही है और उसका कैम्पस में प्रचलित अंग्रेजी - हिन्दी मिश्रण "हिन्दरेजी" से विरोध नहीं है।

पत्रिका के मूलभूत उद्देश्यों में कैम्पस में हिन्दी को सशक्त करना रहा है पर मेरा मानना है कि अतिशुद्ध हिन्दी के प्रयोग की जगह सरल, सहज व प्रचलित हिन्दी का प्रयोग इस दिशा में अधिक कारगार साबित होगा। वाणी के प्रकाशन के आदि से अन्त तक हमारा उद्देश्य रहा है कि पत्रिका में भावों की खुली अभिव्यक्ति हो और लेखों का चयन भी इस आधार पर किया गया है। मान्यवर डॉ हरिवंशराय बच्चन जी को श्रद्धांजलियां अर्पित करते हुए पृष्ठो के अन्त मे उनकी अविस्मरणीय रचना मधुशाला की पंक्तियाँ भी इस वाणी मे सम्मिलित हैं।

आशा है आपकी रचनाओं और विट्स के वर्षभर के स्मरणीय क्षणों के चित्रण के अतिरिक्त हिन्दी साहित्य के चुनिंदा पुष्पों से समन्वित "वाणी 2007" का यह अंक आपको पसंद आएगा। वर्तमान या भविष्य में कभी भी पत्रिका विपविस की यादों को आपके स्मृतिपटल पर अवरेखित कर सकी तो हम अपना प्रयास सफल समझेंगे।

आपका,
आलोक

'सामाजिक व्यवस्था', उफ! आम जिंदगी और विद्यार्थी जीवन, कितना अन्तर है दोनों में? सुबह-सुबह नाश्ता बनाते समय मैंने अपने आप से पूछा- शायद मैं आजकल बहुत कुछ सोच लेता हूँ, अच्छा है... 'आज के समय में प्रेम को देख पाना अर्थात् प्यार जैसे पंछी को समझ पाना जैसे कि सर्दी के कोहरे में चीजों को देखना' स्वयं को आइने के सामने सँवारते हुए मैंने सोचा। मैं बाईस वर्षीय युवक विश्व के सबसे पीड़ादायक, उबाऊ पर आकर्षक कार्यक्षेत्र अर्थात् अभियांत्रिकी (इंजीनीयरिंग) का छात्र हूँ। स्वयं पर ही किये गए प्रयोग का परिणाम (रिजल्ट) बताने वाले हम शायद अकेले प्राणी होंगे। ग्रामीण जीवन से शहरी जीवन में आये चार वर्ष बीत चुके हैं। कॉलेज की हॉस्टल फीस ज्यादा होने से मैं कुछ दूर शहर में एक कालोनी में रहने चला आया हूँ। प्रथम वर्ष बिताने के बाद द्वितीय वर्ष में हॉस्टल छोड़ा, संभवत: काफी देर में यह समझ आया कि हॉस्टल में रहना महँगा पड़ सकता है, घरवालों को।

आजकल रोज सुबह व्यायाम करने के बाद कॉलेज के लिए निकल जाता हूँ। सदैव का यही क्रम महाभारत के समय व श्रीकृष्ण के सुदर्शन की भाँति अटल चला आ रहा है। आज कॉलेज जाते समय मैं सामने वाली गली से निकला और एकाएक मेरी निगाह एक लड़की पर जा ठहरी। गली के दाईं तरफ दो मंजिला हवेली जैसे मकान की खिड़की से वो ऊपर आसमान की तरफ एकटक देखे जा रही थी। मैं क्षण भर के लिए उसे देखता रहा। पीले रंग का कुर्ता जिस पर रंग-बिरंगे फूलों की खूबसूरत डिज़ाइन थी, पहने हुए वो वहाँ अजीब तरह से कंधे को खिड़की की दीवार से टिकाये हुए थी। हल्की गोरी रंगत, भूरी-नीली आँखें, पतली सी नाक व लम्बा चेहरा उसे आकर्षक बनाने में पूर्ण रूप से सहयोग कर रहे थे।
उसे देखने के बाद मैं सोचता हुआ कॉलेज की ओर चल पड़ा।

दो-तीन दिन यही क्रम बना रहा। मैं जब भी वहाँ से गुजरता, वो उसी तरह वहाँ खड़ी रहती। मैं अब उसके बारे में काफी सोचने लगा था। हर वक्त वो मेरी सोच-समझ पर हावी होने लगी थी। आजकल मैं प्रार्थना करता था कि सवेरा शीघ्र हो और मैं वहाँ से गुजर कर उसे अपलक देखूँ। सचमुच मुझे कॉलेज व इंजीनियरिंग के विषय, सब-कुछ रोचक लगने लगे थे। शायद मुझे प्यार हो गया था? मैंने इस चीज को कभी गंभीरता से नहीं लिया। अपने दोस्तों व कॉलेज के सहपाठियों की प्रेम-दास्तानों से मैं वाकिफ था या यूँ कहिये कि मैंने प्यार को अपनी शबनम हर दिशा में बिखेरते हुए खुली नजरों से देखा था। किन्तु स्वयं को कभी इस अहसास में भीगने नहीं दिया, सच तो ये है कि मैंनें इस प्रेम रूपी सच्चाई को कभी माना ही नहीं।

पर मैंने आज खुद को आइने में और प्यार को सीने में धड़कते पाया। गली के मोड़ पर जैसे ही पहुँचा, उसने मुझे देख लिया। मैं पल-भर सकपका गया और निगाह नीची कर ली। वो मुस्कुरा उठी और मैं भी मुस्कुरा कर चल पड़ा। खुद में अजीब सी गुदगुदाहट को महसूस करते हुए कॉलेज पहुँचा तो एकाएक ख्याल आया कि वो हमेशा उसी पीले रंग का परिधान (ड्रेस) पहने रहती है। और वहीं खिड़की पर उसी तरह खड़े रहती है। मैं उलझन में पड़ गया। इस उलझन को मिटाने का उपाय नहीं मिलने पर उदास हो गया। अचानक मुझे याद आया कि कल दीपावली है और मैं बधाई के बहाने उसके घर जा सकता हूँ।
उस रोज दीपावली की शाम को लेकर मैं बहुत उत्सुक था। लक्ष्मी-पूजन के पश्चात् मैं मिठाई लेकर गली के मोड़ पर पहुँचा और दरवाजा खटखटाया।
दरवाजा अधेड़ उम्र की महिला ने खोला जो शायद उसकी माँ थी... 'नमस्ते माँ जी'। मैंने कहा।
'नमस्ते बेटा.....आओ अंदर आओ।' वो महिला बोली।
मैं डिब्बा हाथ में लेकर बैठक में सोफे पर बैठ गया। वह कमरा करीने से सजा हुआ था। सामने दीवार पर काफी तस्वीरें थी। उनमें से बहुत सी में वो भी थी, कभी अकेली कभी माँ-बाप के साथ मगर किसी और के साथ उसकी तस्वीर नहीं थी। माँ जी हाथ में पानी का गिलास लिए आई और देते हुए पूछा 'माफ करना बेटा। मैंने तुम्हे पहचाना नहीं। रोशनी के दोस्त लगते हो? 'तो उसका नाम रोशनी है।' ये सोचते हुए मैंने कहा 'नहीं माँजी, मैं तो पास ही रहता हूँ सोचा सभी पड़ोसी लोगों को दीपावली की बधाई दे दूँ।'

'बहुत अच्छा है बेटा। आजकल ऐसे रीति रिवाज कहाँ बचे हैं ? वैसे तुम्हारा नाम क्या है ?' वे मुस्कुराती हुए बोलीं।
'जी राहुल।' मैंने अपना नाम बताते हुए उन्हें अपने बारे में सब कुछ बताया। वो मेरे लिए नाश्ता लाईं और हमने बहुत सारी बातें की, मैंने माँजी ने, और उनके पति ने। परन्तु रोशनी का कहीं जिक्र नहीं आया। अन्त में मैने ही तस्वीर की तरफ इशारा करते हुए पूछा 'ये शायद आपकी बेटी रोशनी है'।

ये सुनते ही दोनों चुप हो गये और काफी देर शांत रहने के बाद माँजी भर्रायी हुई आवाज में बोलीं 'हाँ बेटा। ये रोशनी है। मेरी बच्ची कितनी प्यारी और मासूम थी लेकिन।'

"थी" शब्द सुनकर मैं चकरा गया। इससे पहले कि मैं कुछ पूछ पाता वे कहने लगीं 'उसे गुजरे हुए तो आठ महीनें हो गये। मेरी बेटी एक पैर से विकलाँग थी। हमेशा अपनी ही दुनिया में मग्न, बहुत ऊँचे ख्वाब थे उसके। सदा अपने सपनों को पूरा होते देखने के इंतजार में खिड़की के पास खड़ी होकर नीले आकाश को ताकती रहती थी। पता नहीं क्या सोचती रहती थी और किसका इंतजार था उसे पर विधाता ने.....

इतना सुनकर मुझे लगा कि संपूर्ण सृष्टि में भूकंप आ चुका है और मैं अकेला पूरी विनाश लीला को नंगी आँखों से देख रहा हूँ। लगा जैसे कि यदि मैं एक पल भी रूका तो शायद धड़कन साथ छोड़ देगी।
"अब मैं चलूँगा माँ जी" मैं चलते हुए बोला।
"अच्छा बेटा आते रहना, तुम बहुत अच्छे लड़के हो।"
जी माँ जी। मैंने दरवाजे से निकलकर कहा।
तभी पीछे से उन्होनें पूछा "बेटा, क्या तुम्हें भी वो खिड़की के पास दिखाई देती है?"
अपने संपूर्ण अस्तित्व को झकझोर देने वाले प्रश्न को सुनकर मैं रूका और धौंकनी सी चलती साँसों को थामकर बोला **"नहीं"**
और मैं बिना पीछे देखे वापस घर चला आया अगले दिन सुबह कॉलेज जाते वक्त मैंनें देखा कि वो वहाँ नहीं थी। खुद को अंदर तक टूटा हुआ पाया मैंने। आखिर किसका इंतजार था उसे, अपने स्वप्नों का, शाम वाली घटना का, या फिर मेरा.....
किस जन्म का संबंध था ये? प्यार के इस स्वरूप को सोचकर मैं स्तब्ध सा मूर्तिवत खड़ा था।

रोबिन कुमार

वार्तालाप - कितना ? किससे?

वार्तालाप - यानि बातचीत। यह एक ऐसी विधा है जिसका अभ्यास हम सभी अपने जीवन के पहले दिन से ही शुरू कर देते हैं और वार्तालाप का सिलसिला चलता ही रहता है हर दिन हर पहर; लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि हम अपने जीवन के सबसे प्रिय पात्र से -"अपनेआप से"- कितनी बातें करते हैं।
हाँ करते हैं। लेकिन शायद इस भागदौड़ भरी जिंदगी में जितनी करनी चाहिए उतनी नहीं। समस्याओं को सुलझाने के लिए, यह आवश्यक है कि बातचीत बंद न हो - स्वयं के जीवन में मिले इस सुझाव को मैंने अपनाया है और इसका चमत्कार देखा है। लेकिन यदि यह चमत्कार है तो महा चमत्कार की कुछ झलक भी मुझे भगवान की कृपा से प्राप्त हुई है। इस महा चमत्कारी तथ्य का सार है- स्वयं से वार्तालाप। इसके अपनाने और अभ्यास का परिणाम का वर्णन सरल नहीं है। लेकिन उस परिणाम का अहसास किया जा सकता है और वह अहसास ही अनमोल है।

लीला रानी
लेक्चरर
प्रबंधन संकाय

प्यास तुझे तो, विश्व तपाकर पूर्ण निकालूँगा हाला,
एक पाँव से साकी बनकर नाचूँगा लेकर प्याला;
जीवन की मधुता तो तेरे ऊपर कब का वार चुका
आज निछावर कर दूँगा मैं तुझ पर जग की मधुशाला ।।

अकथनीय अवसाद

डा॰ पुष्पलता असिस्टैंट प्रोफेसर
भाषा विभाग
बिट्स पिलानी

मैडम! डाकिया आपके नाम का टेलीग्राम लाया है, नाथू ने कक्षा में आकर कहा। सुधा बच्चों को आगे के पाठ को स्वयं पढ़ने का निर्देश दे कर नाथू के पीछे पीछे स्कूल के कार्यालय में आ गयी। सुधा ने हस्ताक्षर कर टेलीग्राम लिया और पढ़ा। नाथू भी जिज्ञासा से सुधा की तरफ देख रहा था; बोला, "मैडम, विकी बाबा आ रहा है न"। सुधा मुस्कुराकर बोली "हाँ, कल सुबह 10 बजे पहुँच जायेगा"। सुधा स्कूल की छुट्टी के उपरान्त घर की तरफ चल पड़ी। रास्ते में घर की तरफ न मुड़कर उसने गाँव के बड़े तालाब की तरफ रास्ता कर लिया। यह तालाब उसके सुख दुःख का साथी था। न जाने जीवन में कितने ही विकट क्षणों का साथी था --- यह तालाब उसके अकेलेपन का एक मात्र साथी था। डूबते सूरज की किरणें तालाब के पानी को स्पर्श कर कितना अनूठा बना रहीं हैं। वह कभी पृथ्वी के साथ बैठ कर घण्टों बातें नहीं कर पायी। बस जब भी बैठे उसी को सुन वह स्वयं कुछ भी नहीं कह पाती थी। लेकिन सुधा ने कई गहरे लम्बे असहनीय अन्तराल वहाँ आकर बिताये थे। जब उसे पृथ्वी के कन्धे पर सर रखकर रोने की जरूरत महसूस होती तो यह स्थान उसको धीरज तो न दे पाता लेकिन उसकी भावनाओं को एक अनकही जुबान से सहारा जरूर देता। सुधा तालाब के किनारे किनारे चल रही थी फिर जाकर उस शिला पर बैठ गयी जहाँ वह 15 पहाड़ जैसे बड़े सालों में कितनी ही बार आकर बैठी थी। पिछले 5 साल से यूँ तो विकी बैंगलौर में इंजीनियरिंग कर रहा है लेकिन इस बार वह डिग्री लेकर लौट रहा है और 15 ही दिन बाद मुम्बई में किसी अच्छी फर्म में नौकरी करने जायेगा। सुधा सूरज की सुनहरी किरणों को अपलक देख रही थी कि उसके आँखो के दोनो कोनों तक अश्रु आ गये और फिर उसकी आँखो से गालों पर ढुलक गये। उसके दृष्टिपटल पर पृथ्वी की छवि उभर आयी थी फिर मन में एक तीक्ष्ण अवसाद उठा और स्वयं ही मुस्कुरा दी और अपने आप से कहने लगी "क्या कभी धरती और आसमान का मिलन हुआ है?" कभी नहीं, यह तो मन की भ्रान्ति है। तो दो अलग अलग दुनिया में रहने वाले प्राणियों का एक छत के नीचे रहना कैसे संभव था। समाज एक परम्परा के तहत उन्हें संयुक्त भले ही कर दे लेकिन समाज के इस निरीह प्रयास से यह असम्भव सम्भव तो नहीं हो जाता।

आज की सुधा को देख कर कोई सोच नहीं सकता था कि सुधा दिल्ली जैसे शहर में पली बढ़ी आधुनिक महिला रही होगी। कभी दिल्ली की सड़को पर स्कूटर और कार चलाती होगी। और जब स्वयं कि जिन्दगी की गाड़ी चलाने निकली तो जैसे गाड़ी ने "पिक अप" लेने से इन्कार कर दिया था। सुधा ने अपने बैग से डायरी निकाली। आज लिखने का मन नहीं था तो उसके पन्ने पलटने बैठ गयी। शादी के चार दिन पहले का पन्ना निकल आया उसमें उसने अपने और निर्मला के बीच भावी जीवन के बारे में की गयी वार्तालाप का विवरण लिख रखा था। उसकी दृष्टि अपने लिखे और बोले वाक्य पर पड़ी ... निर्मला मैं पृथ्वी के साथ रोज सुबह सुबह खूब गप्पे लगाऊँगी और हाँ छुट्टियों में बड़े बड़े तालाब, नदी, पहाड़ और समुद्र की सैर को जाऊँगी। मैं पृथ्वी को यह तो साफ साफ कहूँगी कि आजकल के लोगों कि तरह सिर्फ पैसा कमाने को अपना ध्येय कम से कम न बनायें। जिन्दगी को हम दोनों भरपूर जिएँगें।

सुधा सोचने लगी उसने भी क्या क्या बेहिसाब अरमान संजोये थे। समय ने करवट ली और सब बदल गया। इसी गाँव के सरकारी महाविद्यालय में पृथ्वी प्रवक्ता थे। जीवन की बारीकियों को सैद्धान्तिक रूप से बखूबी जानते थे। अगर उन्होने जीवन के खालीपन को पढ़ा तो उसे महसूस भी किया। समाज के ढकोसलों और अर्थहीन रीति रिवाजों से उन्हें बहुत चिढ़ थी। ऐसा नहीं कि सुधा को पृथ्वी के इन विचारों में कोई मायने नजर नहीं आते थे। लेकिन वह वास्तविकता को एकदम नजर अन्दाज भी नहीं करती थी। पृथ्वी सैद्धान्तिक सत्य को ही व्यवहार में पूर्णत: लेते थे और सुधा वास्तविकता का भी समागम करने में विश्वास रखती थी। पृथ्वी पूर्णतः मानतावादी विचारधारा वाले थे और अपने को खाक में मिला कर भी समाज को गुलोगुलजार करने में विश्वास करते थे। इसके विपरीत सुधा स्व-हित को ध्यान में रखकर कार्य करती थी। उसे लगता है कि गृहस्थ को अवश्यम्भावी परिस्थितियों के

प्रियतम, तू मेरी हाला है, मैं तेरा प्यासा प्याला,
अपने को मुझमें भरकर तू बनता है पीनेवाला;
मैं तुझको छक छलका करता, मस्त मुझे पी तू होता;
एक दूसरे को हम दोनों आज परस्पर मधुशाला ।।

लिए अपने हितों को भी ध्यान में रख कर चलना चाहिये ।यह अन्तर मात्र अर्थ यानी पैसे को ही लेकर नहीं था। सुधा, पृथ्वी और विकी के साथ ज्यादा से ज्यादा समय बिताना चाहती थी। और पृथ्वी को अपने मित्रों से ही फुरसत नहीं मिलती थी।धीरे धीरे सुधा को लगने लगा था कि यह रिश्ता सिर्फ सामाजिक अर्थों में रह गया था। सुधा जब कभी अपनी बात को कहने का प्रयास करती वैचारिक मतभेद के कारण वह कलह में बदल जाता; फिर कभी जब फुरसत के क्षणों में एक साथ चाय पीने का अवसर आता सुधा झगड़ों से बचने के लिये लम्बी बातचीत से बचने लगी और उधर पृथ्वी भी। धीरे धीरे हालात यहाँ तक आ गये कि दोनों जब कभी ऐसे क्षणों में बैठते तो वार्तालाप ही असम्भव सा हो जाता। यह नहीं कि पृथ्वी को इन निरन्तर बढती दूरियों का दुःख नहीं था, लेकिन शायद समय या शायद डर के मारे भाग्य या स्वयं दोनों ही एक दूसरे का साथ नहीं दे रहे थे। पृथ्वी का स्थानान्तरण किसी और जिले में हो गया। पहले कभी कभार आ भी जाते पर धीरे धीरे आना ही बन्द कर दिया। लोगों के प्रश्न उठते और वह गोलमाल कर जवाब देती। धीरे धीरे दुनिया की ओर से उठने वाले प्रश्नों की संख्या कम हो गयी लेकिन विकी के चहरे पर लिखे प्रश्नों का उत्तर देने में हमेशा असमर्थ रही। उसने विकी को बेइन्तहा प्यार से पाल पोसकर बड़ा किया लेकिन उसे वह सब कुछ कभी नहीं बता पायी थी जो उसके उभरते सवालों के कारण थे। सूरज डूबने को था। सुधा ने सोचा और अपने डायरी के रिक्त पन्ने पर लिखा .....

"सुना था इन्सान दुनिया में अकेला ही आता है और अकेला ही चला जाता है। लेकिन एक और भी बात सत्य है कि वह रहता है औरों के साथ पर जीवन वह अकेले ही जीता है। मानव का बहुत कुछ इतिहास पन्नों पर उकेरित हुए बिना रह जाता है। बहुत से गीतों को सुर नहीं मिलता और अधिकांशतः भावना भी अव्यक्त ही रह जाती है। जीवन एक रहस्यमय युक्ति है जो जीता है वह उसे हर सम्भव समझने और हल करने का प्रयास करता है। शायद इसी प्रयास में जीवन जीने का अर्थ निकलता है।"

क्या आप जानते हैं ?

BITS में लगभग 25 से 30 वर्ष पहले यूनीफार्म होती थी।
D-lawns में प्रतिदिन सुबह प्रार्थना सभा बुलाई जाती थी।
बिड़ला म्यूजियम भारत का अपनी तरह का प्रथम म्यूजियम है।
बिड़ला म्यूजियम की नींव 1954 में Reference library के ऊपर रखी थी। इसके निर्माता निर्देशक श्री वी पी बेरी थे।
यहाँ स्थापित हवाई जहाज 1989 में अलग - अलग पुर्जों में पिलानी लाया गया था।
यहाँ रखी कार भारत में बनी प्रथम कार है जो 1991 में लाई गयी थी।
सन् 1947 में कॉलेज का कोई भवन नहीं था ।
सन् 1946 में BEC(Birla Education Trust) के पहले प्रिंसीपल दक्षिण अफ्रीका से आये थे जो काफी भारत विरोधी थे। सन् 1947 में श्री लक्ष्मी नारायण जी प्रिंसीपल बने। उस समय Mechainical और Electrical दो ही विभाग थीं। कक्षायें V-Fast hostel में लगती थीं। उसके पीछे Mechainical lab थी।
Naval Training के लिए सबसे पहले राम व बुद्ध भवन बनाये गये थे।
BEC बनने पर कृष्णा व गाँधी भवनों का निर्माण हुआ।
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद यहाँ अक्सर आया करते थे क्योंकि उन्हें दमा कि शिकायत थी और पिलानी उन्हें बहुत जचता था। एक बार सरदार पटेल भी उनके साथ आये। मैस में पहले मिर्च व प्याज पर प्रतिबंध था। उन्होंने बिड़लाजी से कहा की बच्चों को मिर्च तो खाने दो, तब से मिर्च व प्याज का इस्तेमाल सब्जियों में होने लगा। आधे भाग में मैस थी व दूसरे भाग में कक्षाएँ ली जाती थीं।

भावुकता अंगूर लता से खींच कल्पना की हाला,
कवि साकी बनकर आया है भरकर कविता का प्याला;
कभी न कण भर खाली होगा, पाठकगण हैं पीनेवाले
लाख पिएँ, दो लाख पिएँ ! पुस्तक मेरी मधुशाला ।।

सेवा का मोल

तालियों की गड़गड़ाहट के साथ "छोटे बाबू" के भाषण का समापन हुआ। आस पास के करीब 20-25 गाँवों में लोग उन्हें प्यार से "छोटे बाबू" या "बाबू साहब" के नाम से जानते हैं। जिले के कुछ चुनिंदा व्यक्तियों में से एक हैं "छोटे बाबू" जिन्होंने आजादी की लड़ाई के समय अपने साथियों के साथ जिला स्तर के कई विरोध प्रदर्शन किए और गोलियों की परवाह किये बिना अपनी भागीदारी निभायी।

गाँव के अपने समकालीन बुजुर्गों में सबसे छोटे और एक मात्र शिक्षित होने के कारण "छोटे बाबू" का सम्बोधन तथा स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने की वजह से हर वर्ष गाँव के स्कूल में झण्डोतोलन का सौभाग्य मिलता रहा है। कई प्रधानाध्यापक बदले पर "26 जनवरी" और "15 अगस्त" पर हमेशा छोटे बाबू ही बुलाए जाते रहे।

समय के साथ-साथ उनके भाषणों के मतलब बदलते रहे और तल्खी भी बढ़ती गई। सच जो बोलते हैं। रोजी-रोटी के सच ने उनके दोनो बेटों और उनके पोते-पोतियों को गाँव छोड़ने पर मजबूर कर दिया। कभी-कभी दुःख भी हुआ और बढ़ता ही गया कि जिस स्कूल में उन्हें इतना सम्मान दिया उसकी हालत में सुधार नहीं हो पाया। बेहतर शिक्षा के नाम पर गाँव वाले भी अँग्रेजी स्कूलों में बच्चों को भेजना बेहतर समझते हैं।

आज के भाषण के समाप्त होने पर उनकी आँखों से आँसू निकल आए। अपने युवा पोते "निश्चय" की बातें उनके दिमाग में अभी भी कौंध रहीं थी जो परसों ही अपने माता-पिता के साथ गाँव आया था। दादाजी आपके पास "स्वतंत्रता सेनानी कार्ड" क्यों नहीं है? रेलगाड़ी में आते वक्त एक बुजुर्ग अपने पोते के साथ भारत भ्रमण करते मिले थे। उनका कहना था उनके साथ एक व्यक्ति कहीं भी मुफ्त यात्रा कर सकता है और भी कई सहूलियतें हैं, इत्यादि।

भाषण के बाद घर पहुँच पोते को अपने पास बुलाया और कहा "उचित वक्त है आज के दिन तुम्हें उत्तर देने का।" फिर उनके आँखों के सामने 'पटना' के "सदाकत आश्रम" का वह दृश्य घूम गया जब "जयप्रकाश नारायण" जी अस्वस्थ चल रहे थे और छोटे बाबू अपने मित्रों के साथ उनकी एक सप्ताह से सेवा कर रहे थे। जयप्रकाश बाबू ने प्रसंगवश कहा था "सेवा का मोल नहीं लेना चाहिए" इसी कारण मैंने "स्वतंत्रता सेनानी कार्ड" के लिए आवेदन घर पर आने के बावजूद बैरंग लौटा दिया था।

"निश्चय" को अपने दादाजी पर गर्व हुआ और कुछ दिनों बाद वह वापस शहर चला गया। समय ने कई बदलाव देखे। छोटे बाबू अब काफी अस्वस्थ रहने लगे हैं। "निश्चय" और उसके चचेरे भाई नरेश काफी व्यस्त रहते हैं, आवेदन पत्र भरने में, उच्च शिक्षण संस्थानों में प्रवेश के लिए।

कभी-कभी मन कचोटता था दोनों का दादाजी के कार्ड न होने से आरक्षित वर्ग में नहीं आ सके। कई असफलतायें मिली। अन्त में नरेश ने थक-हार कर पढ़ाई छोड़ दी और गाँव लौट गया।इस बीच "निश्चय" ने पढ़ाई जारी रखी कई उतार-चढ़ाव के बावजूद। निश्चय काफी खुश हुआ जब दादाजी शहर आए नरेश के साथ अपने ईलाज के लिए। एक दिन आराम से बैठने पर दादाजी ने निश्चय कि पढ़ाई लिखाई का हाल जानना चाहा तो कुछ ऐसी बातें बतानी पड़ी जिससे दादाजी बहुत विचलित हुए मसलन महाविद्यालय में कैसे उसे परिचय पत्र बनवाने से लेकर कई और कामों में पैसे खर्च करने पड़े और कई सारी बातें। नरेश बिफर पड़ा और फिरसे कार्ड की बात लेकर दो चार सुना दी। पता नहीं क्यों निश्चय ने भी समर्थन किया। शायद वक्त के थपेड़ों और परेशानियों ने उसे भी कमजोर बना दिया था।

गाँव लौटते वक्त जब रेलगाड़ी जिला मुख्यालय के स्टेशन पर रुकी तो अचानक छोटे बाबू ने नरेश और निश्चय से कहा "यहीं उतर लो"। रिक्शा जब पाठकजी के घर के सामने पहुँचा तो नरेश और निश्चय दोनों विस्मित नजरों से देखने लगे। छोटे बाबू ने कहा कि पाठकजी मेरे पढ़ाई और लड़ाई दोनों समय के मित्र हैं और वर्तमान में स्वतंत्रता सेनानी संघ के आजीवन अध्यक्ष भी। मैं अपने दूसरे पोते पोतियों के लिए कुछ करना चाहता हूँ।'

निश्चय समझ चुका था।

राजीव रंजन सिंह
वैद्युतिकी संकाय

मधुर भावनाओं की सुमधुर
नित्य बनाता हूँ हाला
भरता हूँ इस मधु से अपने

अंतर का प्यासा प्याला;
ठठा कल्पना के हाथों से
स्वयं उसे पी जाता हूँ;

अपने ही में हूँ मैं साकी,
पीनेवला, मधुशाला ।।

संस्मरण

30 जुलाई 2003 जब मैंने अपने सपनों के स्वर्ग में प्रवेश किया... हाँ मैं विप्रविस की ही बात कर रहा हूँ। यह वही दिन था जब मेरा दिल्ली से पिलानी के बीच Jumping Jack पर दिल भी उछल रहा था। पहुँचते ही मेरा अभिकलित्र चलचित्र उतार लिया गया और सुभान अल्लाह वो आज तक का सबसे वीभत्स चेहरा था (आज भी हर Test में वो चेहरा सामने रखा होता है) व्यास भवन 315 से शुरूआत हो गई एक नये सफर की। Meet ur Room Pop (KR-202) पहली पंक्ति जो मैंने पढ़ी और भविष्य में होने वाली रैगिंग को सोचकर सहम गया। किन्तु फिर ध्यान आया कि कल Online registration है। फिर कुछ आवाजें सुनाई दीं "मच्चा ये प्रोफ God level है इसे अटेन्ड करते हैं। मैंने अपने सीनियर से पूछा है..." मैंने भी किसी सीनियर से पूछने की ठानी और वो इतने सहायतार्थ थे कि पूरी रात्रि मेरी सहायता करते रहे। खैर किसी तरह से रजिस्ट्रेशन हुआ और कक्षायें प्रारंभ हो गयीं। मेस में घुसते ही साँभर, कर्ड राईस ..... रेडी ही मेरी नई मेस हो गई। पहला महीना तो हँसते खेलते बीता (सीनियर के साथ दबाव पूर्वक) किन्तु उसके बाद वो दोस्त बन गए पर टेस्ट सीरीज रूपी दुश्मन सामने खड़ा था। अरे Classes के बारे में तो आपको बताना भूल ही गया। पहले दिन आगे की डेस्क पर बैठा, दूसरे दिन पीछे की डेस्क पर बैठा, तीसरे दिन खड़ा रहकर लेक्चर अटेन्ड किया, चौथे दिन खिड़की से बाहर से दूर से ही लेक्चर सुना, और पाँचवे दिन .....(कमरे में बैठकर लेक्चर अटेन्ड किया!!!!) फिर तो Give up से मेरी दोस्ती हो गई और बॉसम, ओएसिस और Compre's के बाद समझ में आया कि मुझे कुछ समझ में नहीं आया। फिर हिन्दी प्रेस का साथ मिला और किसी तरह प्रथम वर्ष समाप्त हो गया।

अब द्वितीय वर्ष शुरू हुआ और नयी विंग के साथ सारे दोस्तों के बीच '2-1 मैक ले' की भावना को चरितार्थ करते हुए हंगामे की शुरूआत हुई और रही सही कसर अभिकलित्र ने पूरी कर दी। कक्षाएँ तो जाते नहीं थे, क्योंकि अनुभव से ये पता लगा कि "कुछ भी कर लो सी ही बनेगा और कुछ न भी करो तो भी सी ही बनेगा।" आए दिन विंग में बार्डन सर का आगमन हो जाता था। सीपी 2 की वह आनलाईन कभी नहीं भूली जा सकती जिसमें जाने से पहले हम पूरे एक घंटे तक विंग में नाचे और 15 मिनट आईपीसी के बाहर (सभी के <10 आए थे)। प्रथम सत्र की समाप्ति के बाद द्वितीय सत्र आरम्भ हुआ और अब विंग में कुछ पढ़ाई होने लगी क्योंकि प्रथम वर्ष के बाद शायद ही कोई था हमारी विंग में जो सीजीपीए मेन्टेन कर पाया था। 2-2 में तो बस और बस एमटी 2 ही होता है। इसी बीच हमारे भवनों में लैन स्कैनर शेयरिंग इंटरभवन पर प्रतिबंध लगा दिया गया और इसका कारण मैं ही था, पूरे बैच से अपशब्द सुनने को मिले, हाँ ES-2 का जिक्र यहाँ पर करना बहुत आवश्यक है, यह विषय जितना हम लोगों ने Test 1 के लिए पढ़ा था उतना ही Compres के लिए तक पढ़ा और किसी तरह अत्यन्त भयावह परिस्थिति से खुदको बचाया और Sac "C" बनाया। हाँ, किन्तु यह वर्ष मेरी जिन्दगी का सबसे प्यारा समय था (हमने जिन्दगी जी थी)।

इसके बाद PS-1 बिना किसी कार्य के सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गया, और आया तृतीय वर्ष। CDC's जिसका A7 और A3 वालों को तहे दिल से इन्तज़ार होता है, पहली बार Bitsian life में मैं और विंग वाले पढ़ाई के लिए सीरियस हुए थे और पता लगा कि Yo life और life में क्या अन्तर होता है, इसी बीच क्लब की जिम्मेंदारियाँ भी आईं और DS के Assignments भी। पूरे दो सत्र Assignments करने में निकल गये और पहली बार पढ़ने में मज़ा आया (Thanx to our assignments)। इस बीच विंगीज़ के प्रेम प्रसंग भी बनते टूटते रहे। आखिरकार तृतीय वर्ष समाप्त हुआ और PS-2 आरम्भ हो गया। "विट्स क्या है" यह विट्स के बाहर जाकर ही पता चलता है। सुबह शाम की मशीनी ज़िन्दगी में Chatting और दोस्तों के फोन ही स्नेहक (lubricant) का काम करते रहे। यह पाँच महीने Bitsian life के सबसे नीरस महीने थे और जब P.S. खत्म हुआ तो लगा कि किसी कालापानी कैदी को स्वतंत्रता दे दी गई है।

अब अन्तिम सत्र आरम्भ हो चुका है। कम्पनी, जॉब्स ऑफर की पशोपेश के बीच आँखमिचौली खेलते हुए मज़ा आ रहा है। यादों के पुलिन्दों का निचोड़ करें तो विप्रविस केवल एक Institute नहीं है वरन् एक जीवन है, एक सत्य है, एक स्वर्ग है। खुद को तीन वर्ष पहले और आज देखने के बाद यह अनुभव होता है कि हाँ "कुछ तो बात है"। अब दिन तेज़ी से बीतते जा रहे हैं, समय को मुठ्ठी में कैद करने का मन है। Skylawns, रेडी, LTC, पुस्तकालय, कनॉट. कुछ आवाजें दूर जाती सुनाई पड़ रही हैं जुक, Sac, मच्चा, Gen

आपका वैभव रिखाड़ी (Psenti semite)

मदिरालय जाने को घर से चलता है पीनेवाला,
'किस पथ से जाऊँ?' असमंजस में है वह भोलाभाला;
अलग-अलग पथ बतलाते सब पर मैं यह बतलाता हूँ. . . .
'राह पकड़ तू एक चला चल, पा जाएगा मधुशाला' ।।

"बंदे में था दम, वंदे मातरम् . . ."

लगे रहो मुन्ना भाई, लगे रहो। कुछ दिनों पहले निकली आपकी यह फिल्म गाँधीगिरी का जो स्वाद अपने साथ लाई थी, बोले तो, मज़ा आ गया मामू.....।

लेकिन क्या आपको सही में लगता है कि इस उपभोक्तावादी ज़माने में कोई सही में गाँधी या उनके विचारों के बारे में सोचता होगा, या आपकी फ़िल्म देखने के बाद सोचेगा? सच बात तो यही है कि जैसे जैसे वक्त गुजरता जाएगा, लोगों के मन में गाँधी के प्रति नफरत का भाव बढ़ता जाएगा, क्योंकि बच्चे हमेशा अपने आस पास के बड़ो से सीखते हैं, और हमारी बदकिस्मती कहिए या कुछ और, देश के जो ज़िम्मेदार हैं, जो बड़े हैं, जो समझदार हैं, या होने चाहिए, वे खुद ग़ैरज़िम्मेदाराना हरकतें करते हैं। खुद गाँधी से नफ़रत करते हैं। क्यों?...

बापू का कहना था हिंसा सिर्फ तभी करो जब तुम्हें हिंसा और कायरता में से किसी एक को चुनना हो। बापू ने कहा था कि यह देश एक परिवार है, लेकिन हम क्या करते हैं? "मैं हिंदू हूँ , बाकि सब विधर्मी हैं" , " मैं मुसलमान हूँ , बाकि ग़ैर क़ौम के हैं" , " उसके पास मत जाओ, वह नीची जात का है" , " उससे मत मिलो, वह High Society का नहीं है", " मैं पंजाबी हूँ", " मैं बंगाली हूँ", "मैं बिहारी हूँ", " मैं तमिल हूँ", किसी के मन में पहले यह नहीं आता " मैं हिंदुस्तानी हूँ"। जात, सम्प्रदाय, रुतबे को लेकर लोग इतने जुनूनी हैं कि कोई भी इस बात पर ग़ौर करने को तैयार नहीं है कि देश लहूलुहान हो रहा है, वतन हमारा अंदर से खोखला हो रहा है।

बापू ने कहा था कि जो संपन्न हैं, वह ग़रीबों के लिए Trustee बनें, क्योंकि इस देश के ग़रीब किसान और मज़दूर वह खून हैं, जो कि इस अर्थव्यवस्था को जिलाए हुए हैं, और ये वे लोग हैं, जिन्हें आर्थिक और सामाजिक मदद की तुरंत और सख्त ज़रूरत है। मगर सुनने की फ़ुर्सत किसे है? जहाँ पानी की भरमार है, वहाँ हम नल खुला छोड़ देते हैं, जबकि करोड़ों लोग ऐसे हैं, जो कि पानी की एक एक बूंद के लिए तरस जाते हैं, साफ़ पानी मिलना तो बहुत दूर की बात है। जिनके पास पैसा है, वह अय्याशी से कभी नहीं चूकते हैं। जो अपनी खून पसीने की कमाई से खा रहा है, उसकी बात अलग है, जो दूसरों पर पल रहे हैं, उनकी तो कोई हद हो? पैसों के गुरूर में डूबा इंसान यह भूल जाता है कि कब उसने किसी बेसहारा के मौलिक अधिकारों को कुचल डाला।

"कर" की चोरी करना, बिजली के बिल पर हाथ साफ करना, ये सब तो जैसे आम बात हो गयी है। हमारी सरकार चाहे किसी भी राजनैतिक दल की बनी हो, कर्ज़े में डूबकर भी वह हमारे लिए सड़कें बनवाती है, नहरें खुदवाती है। फिर भी अगर किसी को फायदा नहीं पहुँचता तो वह बीच के नेताओं, नौकरशाहों और ठेकेदारों को दोषी ठहराकर अपनी ज़िम्मेदारियों से मुक्त हुआ महसूस करती है। हाँ, यह दोष सही भी है, लेकिन हम कौन होते हैं ऐसा कहने वाले? कोई हक नहीं बनता है हमारा कि हम उन्हें दोषी ठहराएँ। क्योंकि हम खुद इतने गिरे हुए हैं कि जिन्हें हम चुनेंगे, वह तो गिरे हुए होंगे ही। हम अपने घर को गंदा करके कभी यह उम्मीद नहीं लगा सकते कि नगरपालिका का ट्रैक्टर आएगा उसे साफ करने। अगर आज सब "कर" देना शुरु कर दें तो मजाल है किसी की कि भारत को कर्ज़ में डुबा सके?...

भले ही गाँधी ने कुछ ऐसी बातें कही हैं, जो कि आज की दुनिया में संभव नहीं है, लेकिन इसके लिए हम उन्हें सिरे से खारिज नहीं कर सकते। लेकिन हम यही करते हैं, और शायद इसीलिए आज़ादी के साढ़े उन्सठ साल बाद भी हमारा यह देश एक राष्ट्रभाषा के लिए जूझ रहा है।

आज़ाद तो पाकिस्तान भी अँग्रेज़ों से हो गया था। हम से एक दिन पहले हुआ था। लेकिन भारत और पाकिस्तान की पहचान में कहाँ और क्यों फ़र्क आता है, यह कभी सोच के तो देखिए ज़रा। आपको जवाब में कहीं न कहीं बापू ज़रूर दिखेंगे।

-शुभ्रोज्योति सरकार

चलने ही चलने में कितना जीवन, हाय, बिता डाला!
' दूर अभी है', पर, कहता है हर पथ बतलाने वाला;
हिम्मत है न बढ़ूँ आगे को किंकर्तव्यविमूढ़ मुझे कर
साहस है न फिरूँ पीछे; दूर खड़ी है मधुशाला ।।

स्वास्थ्य क्या है ?

स्वास्थ्य क्या है? क्या हम स्वस्थ हैं? हम स्वस्थ कैसे रह सकते हैं? इस तरह के प्रश्न अगर हमसे पूछे जायें तो हम इनका उत्तर अलग-अलग तरह से देंगे और ज्यादातर उत्तर शारीरिक स्तर पर ही होंगे। अगर हमारे अंदर किसी शारीरिक बीमारी के लक्षण नहीं हैं और आजकल कोई दवाई इत्यादि नहीं ले रहे हैं तो हम अपने आप को स्वस्थ ही कहेंगे। लेकिन अगर हम विश्व स्वास्थ्य संगठन की परिभाषा पर गौर करें तो हमें पता चलता है कि केवल रोग की अनुपस्थिति ही स्वास्थ्य नहीं है बल्कि शारीरिक, मानसिक और सामाजिक यहाँ तक कि आध्यात्मिक स्तर पर भी एकरूपता जरूरी है। अगर हमें पता लगाना है कि क्या हम स्वस्थ हैं तो हमें अपने आप को उपरोक्त सभी स्तरों पर जाँचना होगा।

अगर शारीरिक तल पर बात करें तो बहुत ही साधारण विश्लेषण से हम पता लगा सकते हैं कि हम स्वस्थ हैं या नहीं। जैसे कि प्राकृतिक नींद का अच्छे से आना (7-8 घंटे प्रतिदिन), प्राकृतिक भूख का अच्छे से लगना और प्राकृतिक ढंग से मल का निष्कासन होना, शारीरिक तल पर स्वस्थ होने के लक्षण हैं। जब कभी उपरोक्त तीनों में से किसी एक में भी विघ्न पड़ जाता है तो तीनों क्रियाओं में तालमेल बिगड़ जाता है और हम बीमार हो जाते हैं। शारीरिक व्यायाम और आसन इत्यादि करने से इन तीनों क्रियाओं में तालमेल रखा जा सकता है। स्वस्थ रहने के लिए बहुत ही जरूरी है कि हम शरीर को स्वस्थ रखें जो कि मानसिक स्तर पर स्वस्थ रहने के लिए भी जरूरी है। क्योंकि तन और मन दोनो ही आपस में जुड़े हुए हैं इसलिए एक दूसरे के स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। स्वस्थ होने के लिए हमें अपने हर एक काम को और कर्तव्य को प्रसन्नता से निभाना चाहिए। तन मन से स्वस्थ होने पर ही हम अपने से बाहर निकल सकते हैं और सामाजिक स्वास्थ्य के बारे में सोच सकते हैं। सामाजिक स्वास्थ्य के लिए हमें एक ऐसे समाज की कल्पना करनी चाहिए और उसके निर्माण में स्वयं ही शुरूआत करनी चाहिए जिसमें हम हर किसी को आपने जैसा ही समझे और हर एक के साथ साथ दूसरों को भी स्वस्थ बनाने में हम दूसरों को खुशी देकर आनन्द का एहसास और अनुभव करते हैं। ऐसे समाज में ही हम भुखमरी, रिश्वतखोरी और लूटमार आदि सामाजिक बीमारियों को समाप्त करने की कल्पना कर सकते है।

शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से स्वस्थ होने पर हम आध्यात्मिक स्वास्थ्य की ओर बढ़ते हैं। इस प्रकार हम अपने आप को और दूसरों को भूलकर उस परम् पिता परमेश्वर अथवा आत्मा एवम् परमात्मा की तरफ अपना ध्यान लगाते हैं और अपने असली स्वरूप को पहचानने की कोशिश करते हैं- जो कि मनुष्य जन्म का परम् उद्देश्य है।

अगर आज की शिक्षा प्रणाली को हम देखें तो पाते हैं कि हम बौद्धिक विकास को ही पूरा महत्त्व दे रहे हैं और अपने मूल से दूर होते जा रहे हैं। हमारे पास हर किसी के लिए समय होता है, अपनी पढाई के लिए, अपने परिवार और मित्रों के लिए, फिल्म देखने के लिए आदि। लेकिन हम स्वयं के प्रति ही लापरवाह होते हैं। इसके परिणामस्वरूप हमें अनेकों शारीरिक, मानसिक और सामाजिक दुःखों का सामना करना पड़ता है जिनको सहन करने की शक्ति भी हमारे अंदर धीरे धीरे समाप्त होती जा रही है। पूर्णविकास के लिए हमें न केवल बौद्धिक विकास बल्कि शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास की तरफ भी ध्यान देना चाहिए। ऐसे विकास की शुरूआत हमें स्वयं से और जैसी स्थिति में हम हैं वैसी स्थिति से ही करनी चाहिए तभी हम पूर्ण स्वस्थ हो सकते हैं और तभी हम वो पा सकते हैं जो वास्तव में हम सभी पाना चाहते हैं।

लेखक
दिनेश कुमार
एम. ई. विभाग रिसर्च एवं कन्सलटेंसी विभाग

मुख से तू अविरत कहता जा मधु, मदिरा, मादक हाला,
हाथों में अनुभव करता जा एक ललित कल्पित प्याला,
ध्यान किए जा मन में सुमधुर, सुखकर, सुन्दर साकी का;
और बढ़ा चल, पथिक, न तुझको दूर लगेगी मधुशाला ।।

हिन्दी क्यों ?

अक्सर जब हम देशप्रेम या साहित्य सेवा की बात करते हैं तो अँग्रेज़ी में बोलते हैं और समझते हैं कि बहुत अच्छा और बड़ा काम कर रहे हैं। हमारे देश के बुद्धिजीवी कहते हैं कि हिन्दी भाषा विचारों को अभिव्यक्त करने में सक्षम नहीं है और इसलिये इसका व्यापक उपयोग नहीं हो सकता। इस बयान से उनकी हीनभावना और अशिक्षा ही झलकती है। किसी भी भाषा का कितना अच्छा और व्यापक प्रयोग हो सकता है यह उस भाषा पर नहीं उस भाषा के जानने वाले पर निर्भर करता है। अगर हम अपनी राष्ट्रभाषा पढ़, लिख, समझ कर उसका व्यापक उपयोग नहीं कर सकते तो यह भाषा का नहीं हमारा दोष है।

विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में हिन्दी तीसरे स्थान पर है, फिर भी साहित्यिक और शैक्षिक महत्त्व में इसका स्थान फ्रेंच, जर्मन और जापानी भाषाओं से बहुत नीचे है जिनके बोलने वाले हिन्दी की तुलना में बहुत कम हैं। हिन्दी भारत, नेपाल, इन्डोनेशिया, मलेशिया, सूरीनाम, फ़िजी, गुयाना, मारिशस, ट्रिनिडाड, टोबेगो और अरब अमीरात जैसे अनेक देशों में बोली जाती है, फिर भी विडम्बना यह है कि आज तक इसे अन्तर्राष्ट्रीय भाषा का दर्जा नहीं मिल पाया है। इसका प्रमुख कारण भारतीयों में इच्छाशक्ति की कमी है। अगर हम अपनी भाषा को अपने ही घर में नहीं बोल सकते तो इसे विश्व भाषा का दर्जा क्या दिलवायेंगे?

इस संदर्भ में हम फ्रांसीसी लोगों से बहुत कुछ सीख सकते हैं। वे अपनी मातृभाषा से प्रेम करते हैं और बड़ी मेहनत से विश्व भर में उसका प्रचार करते हैं। उनके यहाँ फ्रेंच के विकास के लिये एक मंत्री अलग से होता है जिसे फ्रांकोफ़ोन मिनिस्टर कहते हैं।

अँग्रेज़ी को ही लीजिये लगभग हर देश में अँग्रेजी दूतावास के साथ अँग्रेजी शिक्षा का प्रचार विभाग होता है। हमारे विदेशी दूतावासों में ऐसे कितने हिन्दी प्रचार विभाग हैं? क्यों हम अपनी भाषा के विकास में उनका अनुसरण नहीं करते? हम इज़राइल जैसे छोटे और नये देश को देखें। 1948 में जब वह स्वतंत्र हुआ था तब वहाँ उनकी मातृभाषा हीब्रू के जानने वाले बहुत कम थे। उन्होंने एक सुनियोजित कार्यक्रम के तहत काम करना शुरू किया और 1995 तक उन्होंने अपनी भाषा का इतना विकास कर लिया कि उच्च शिक्षा तक में इसका प्रयोग हो सके।

इसी प्रकार 1960 में रूस में दो भाषा सम्प्रदाय थे। एक पर पाश्चात्य प्रभाव था और दूसरी पर स्थानीय स्लोवानिक शब्दों और भाषा रचना का। स्लोवानिक सम्प्रदाय की संरचना कठिन थी और उसका प्रयोग कम होने के कारण उसके जानने वाले कम थे। लेकिन रूस ने एक शिक्षा आन्दोलन चला कर इस समस्या को सुलझा लिया। हमें इससे सीख लेनी चाहिये।

आज तक हम अपने देश में हिन्दी में उच्च शिक्षा का प्रबन्ध नहीं कर सके हैं। हमारे गाँवों के बच्चे आज भी मेडिकल कॉलेजों और इंजीनियरिंग कॉलेजों में उच्च शिक्षा प्राप्त करने का सपना भी नहीं देख सकते हैं क्योंकि इनमें शिक्षा का माध्यम अँग्रेज़ी है। इस प्रकार न केवल हम अपने देश की जनता के एक बड़े वर्ग को उच्च शिक्षित होने से रोकते हैं बल्कि अपने देश की उन्नति में बाधा भी खड़ी करते हैं। चीन, फ्रांस, जर्मनी आदि देशों के विकास का कारण यह है कि उनके देश में शिक्षा का माध्यम उनकी अपनी भाषा है। उनके देश के विद्यार्थियों को अपना बहुमूल्य समय और मानसिक शक्ति एक विदेशी भाषा सीखने में व्यय नहीं करनी पड़ती।

विख्यात वैज्ञानिक जयन्त नारलीकर, जिन्होंने हिन्दी में अनेक उपयोगी पुस्तकें लिखीं हैं का मानना है कि "वैज्ञानिक शोध में एक स्थिति वह आती है जब विदेशी भाषा अपर्याप्त साबित होती है। तब हमें मातृभाषा को ही अपनाना पड़ता है।" सच तो यह है कि ऐसे समाज में जहाँ भाषा और विज्ञान का आपसी संबंध प्रगाढ़ न हो, विज्ञान में मौलिकता का विकास हो ही नहीं सकता। रूस, चीन, जापान, फ्रांस और जर्मनी आदि देशों ने अपनी मातृभाषा और वैज्ञानिक विकास के बीच एक क्रमबद्ध तालमेल विकसित किया जिसके कारण इन देशों का तेज़ी से विकास हुआ। हिन्दी में हमें इसी तरह के एक विकास आन्दोलन की आवश्यकता है।

मदिरा पीने की अभिलाषा ही बन जाए जब हाला,
अधरों की आतुरता में ही जब आवाक्षित हो प्याला,
बने ध्यान ही करते-करते जब साकी साकार, सखे,
रहे न हाला, प्याला, साकी, तुझे मिलेगी मधुशाला ।।

हिन्दी के सिर पर पैर रख कर अँग्रेज़ी की वकालत करने में हमें शर्म आनी चाहिये। टीवी, फ़िल्म, रेडियो और समाचार पत्रों से हिन्दी को विश्व में अच्छा सम्मान मिला है लेकिन यह देख कर दुःख होता है कि इन प्रचार माध्यमों के लोकप्रिय सितारे साक्षात्कार के समय अक्सर अँग्रेज़ी ही बोलते हैं। कुछ लोगों का तर्क है कि नौकरी के लिये अँग्रेज़ी जानना बहुत ज़रूरी है और इसलिये इसे बिहार में दूसरी अनिवार्य भाषा का दर्जा दे दिया गया है।

यह एक हास्यास्पद बात है। एक आकलन के अनुसार 5 प्रतिशत पहले दर्जे की नौकरियों और 15 प्रतिशत दूसरे दर्जे की नौकरियों को छोड़ दें तो तीसरे और चौथे दर्जे की 80 प्रतिशत नौकरियों के लिये अँग्रेजी जानने की कोई ज़रूरत नहीं है। यहाँ यह गंभीरता से सोचने की बात है कि अँग्रेज़ी के कारण सेकेन्ड्री परीक्षा में फेल होने वाले सभी छात्र इन तीसरे और चौथे दर्जे की नौकरियों के लिये भी अनुपयुक्त हो जायेंगे। इनके लिये हम नौकरियाँ कहाँ से लायेंगे? क्या अँग्रेजी को इतना महत्त्व देकर हम अपने देश में बेरोज़गारी नहीं बढ़ा रहे हैं?

भाषा केवल शिक्षा का माध्यम ही नहीं होती यह संस्कृति का माध्यम भी होती है। अँग्रेज़ी का अंधानुकरण हमें असंगत जीवन शैली और मूल्यों की ओर ले जाता है। इस प्रकार हम सांस्कृतिक साम्राज्यवाद का सीधा शिकार होते हैं। जिन भारतीय मूल्यों के लिये शहीदों ने प्राणों की बाज़ी लगा कर स्वराज हमें सौंपा था, आज विदेशी भाषा और संस्कृति के प्रेम में वे भारतीय मूल्य हम फिर ख़तरे में डाल रहे हैं।

हमें कीनिया के उपन्यासकार नागुगी वा थवांगो का अनुकरण करना चाहिये जिन्होंने अँग्रेज़ी में लिखना बंद कर के 'गिकुमु' और 'स्वाहिली' जैसी अफ़्रीकी भाषाओं में लिखना शुरू कर दिया है। उनका कहना है "एक लेखक का यह मानना कि यूरोपीय भाषा के बिना अफ़्रीका नहीं चल सकता उसी प्रकार है जैसे एक राजनीतिज्ञ कहे कि बिना विदेशी शासन के अफ़्रीका नहीं चल सकता।" हिन्दी हर प्रकार से एक सशक्त और सम्पन्न भाषा है। हमें भारत के विकास के लिये, भारतीय संस्कृति के विकास के लिये, और हमारे सांस्कृतिक मूल्यों के विकास के लिये हिन्दी बोलने,लिखने,पढ़ने और इसका प्रत्येक क्षेत्र में विकास करने की आवश्यकता है।

यतीश जैन
द्वितीय वर्ष छात्र

Embry
Education Exposure Research

EMBRYO- यह शब्द आज भारत की अध्ययन प्रणाली में आई क्रांति को सूचित करता है। विप्रविस पिलानी के कुछ Alumni के उत साह के फलस्वरूप इस सकंल्पना का उदय हुआ। Embryo का जन्म एक साधारण सी बातचीत में हुआ और आज एक पूरे सत्र की सफलता के बाद यह एक सराहनीय मुकाम पर पहुँच गया है।

M.B.A., M.S./Ph.D. और उसके अलावा C.S./I.S, Mechanical, Bio-sci, Chemical, EEE आदि विशिष्ट विषयों पर आधारित 25 लेक्चरों की सफलता के बाद अब Embryo हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना चुका है।

नए वर्ष की नई सुबह के साथ Embryo अपने लक्ष्य की तरफ नए कदम बढ़ा रहा है। इस सत्र के कुछ लेक्चर सत्र में पढ़ाए जाने वाले विषयों पर भी आधारित होगें। Embryo द्वारा आयोजित "व्यापार व्यवसाय एवं नेतृत्व" की Seminar श्रृखंला विद्यापीठ के MBA पाठ्यक्रम से संकलित कर दी जाएगी।

इसके अलावा दो M.E. courses और जीवशास्त्र के एक चयनित पाठ्यक्रम पर भी जानेमाने Alumni द्वारा लेक्चर आयोजित होगें। तो फिर अपनी पसंद के विषय पर आधारित लेक्चर के लिए देखते रहिए FD's और Mess के सूचना पटल।

शुन, कलकल, छलछल मधु-घट से गिरती प्यालों में हाला,
शुन, रूनझुन रूनझुन चल वितरण करती मधु साकीबाला,
बस आ पहुँचे, दूर नहीं कुछ, चार कदम अब चलना है;
चहक रहे, शुन, पीनेवाले, महक रही, ले, मधुशाला ।।

Capitol नाइट

बिप्रविस में पढ़ रहे दिल्ली के छात्रों की प्रस्तुति Capitol नाइट सेमेस्टर की पहली Assoc नाइट थी। सभी लोग एक अच्छे अनुभव की उम्मीद लेकर पहुँचे और Capitol ने उन्हें निराश नहीं किया। प्रोफेसर श्रीमती सुमन कपूर ने दीप प्रज्जवलित कर Capitol नाइट का शुभारंभ किया। शुरुआत हुई दिल्ली पर एक चलचित्र से। इस प्रस्तुति ने सभी को राजधानी के दर्शन करा दिए। इस के बाद हुए माइम "हिल गया क्रिश ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।यह माइम क्रिश और प्रियंका के बेटों जय और वीरु की कहानी थी। फिर बारी आई "तेरी दीवानी" और "मैं ऐसा क्यों हूँ" पर दो मनमोहक नृत्य प्रस्तुतियों की। इन दोनों को भी दर्शकों ने काफी पसंद किया। इसके बाद हुई छात्र-छात्राओं की सामूहिक नृत्य प्रस्तुतियाँ और फैश-पी भी काफी सराही गई। Anchoring और नृत्य सभी में छात्रों की मेहनत साफ झलक रही थी। गिटार पर प्रबल की गीत प्रस्तुति "Californication" के साथ नाइट का अन्त हुआ। दो घंटे चली यह नाइट काफी मनोरंजक रही।

रागमालिका

फरवरी माह के अंत में रागमालिका ने एक भारतीय सांस्कृतिक संगीत उत्सव संगमम 2007 का आयोजन किया।पाश्चात्यीकरण के बढ़ते कोलाहल में भारतीय संस्कृति के इस शाश्वत स्वरूप का मंगलाचरण सिंहनाद के समान प्रतीत हुआ। भारतीय संस्कृति -विषयक कार्यक्रमों के प्रति आमतौर पर उदासीन रहने वाली युवा जनता की प्रकृति के अनुकूल ,विप्रविस के विद्यार्थियों की उत्साहवर्धक प्रतिक्रिया ने आयोजकों को भी आश्चर्यचकित कर दिया।जहाँ एक ओर प्रायोजकों ने 2.96 लाख रुपए की विपुल राशि का अनुदान दिया वहीं दूसरी ओर देश के विख्यात कलाकारों को बिट्स पिलानी की धरती पर लाने का भरपूर प्रयास किया गया।रागमालिका के सदस्यों ने भी अपनी ओर से भरतनाट्यम शैली में स्वाति तिरुनल की अष्टनायिका नामक नृत्य नाटिका पेश की।संगीत कलानिधि पद्मभूषण श्री टी.वी.शंकरनारायण ने राग हंसध्वनि में कृति पुण्यम ओरु कोडी प्रस्तुत की जो कि परम पवित्र शंकराचार्य श्री चंद्रशेखर सरस्वती के सन्यासग्रहण शती पर रची गई थी। दूसरे दिन श्री गणेश के सम्मान में बने मंच पर वीणावादक श्री रविकिरण एवं बाँसुरीवादक श्री प्रवीण गोड़खिंदी की युगलबंदी ने संध्या का समाँ बाँध दिया। अंतिम दिन श्रीमति आनंद शंकर जयन्त की नृत्यमंडली ने श्रेष्ठ काव्य गीतगोविन्द के दशावतार खंड का मंचन किया। इस प्रकार संगमम् 2007 के इस ग्यारहवें संस्करण ने एक ओर तो श्रोताओं का साक्षात्कार संगीत नभ के दीप्यमान नक्षत्रों से तो कराया ही,वहीं दूसरी ओर अद्वितीय छात्र प्रतिभा को प्रदर्शित का अवसर भी दिया।

PCA नाइट

पंजाब सांस्कृतिक संघ (PCA) नाइट का शुभारंभ बिट्स के वाइस चॉंसलर एल. के. माहेश्वरी ने दीप प्राज्जवलन के साथ किया।तत्पश्चात् पंजाबी प्रार्थना (अरदास) सुनकर बिट्सियन जनता मंत्रमुग्ध हो गई। फिर पंजाब का लोक नृत्य पेश किया गया। यदूराव और करन डल की जोशीली anchoring सभी को पसंद आई।इसके बाद पीयूष, सपन और ईशान ने "कम्बख्त इश्क मोहब्बत कर ले कर ल"और "जिसे ढूँढता हूँ मैं हर कहीं"पर ब्रेक डांस प्रास्तुत किया। फिर नीतू,गरिमा और उनके साथियों के नृत्य "तेरी अँखदा नजारा" को जनता ने खूब सराहा। इसके बाद बारी आई नाटक मोहब्बत जट् दी भाग दो की। नाटक की कहानी फिल्म निर्देशक के चक्कर मे फँसे हुए एक युवक पर आधारित थी।PCA की पेशकश फैश-पी ने काफी धूम मचाई।फिर प्रास्तुत हुआ पंजाब की पहचान भांगड़ा और फिर फ्यूजन जिसमें इन्होनें पुराने और नए हिन्दी गानों पर एक साथ नृत्य प्रास्तुत किया।दो घंटे चली इस नाइट की समाप्ति भंगड़ा नृत्य "तेरे नाल जिंद लग गई" से हुई।कुल मिलाकर नाइट सफल रही ।

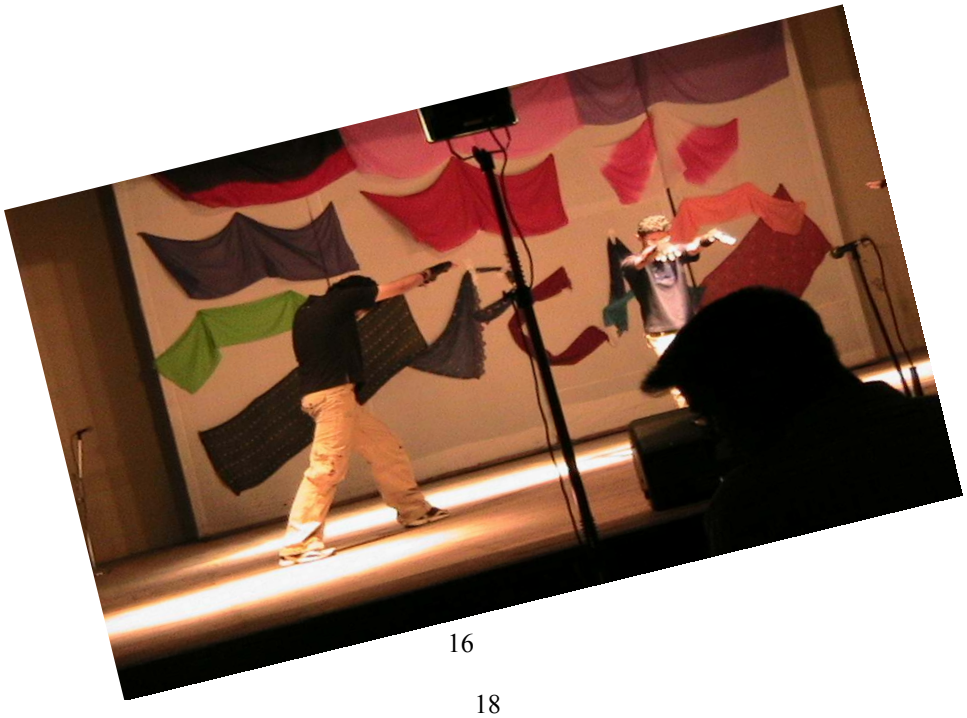

इनब्लूम

आयोजन दिनांक 17 फरवरी को ऑडी में हुआ। पिछले वर्ष के टूटे हुए क्रम को पुनर्वासित करते हुए इस वर्ष का रंगारंग कार्यक्रम की शुरूआत बुद्ध भवन द्वारा प्रस्तुत गानों से हुई। ऑडी में बिट्सियन जनता की मौजूदगी उनके भवनों के प्रति उनका उत्साह प्रकट कर रही थी। व्यास भवन द्वारा प्रस्तुत Flash video तथा गानें काबिले तारीफ थे। परंतु मीरा भवन द्वारा प्रस्तुत गीतों ने तो दर्शकों को झूमने पर मजबूर कर दिया और उनके नृत्य को भी सराहा गया। गाँधी भवन ने अपनी देशभक्ति को नृत्य के द्वारा प्रस्तुत किया। उन्होंने कुछ गानों से दर्शकों का भरपूर मनोरंजन किया। परंतु इस इनब्लूम का विशेष आकर्षण राम भवन द्वारा अनोखी प्रस्तुति थी। उन्होनें राम भवन को समर्पित एक विशेष गाना प्रस्तुत किया जिसके सम्मान में सभी राम भवन के वासी खड़े हो गए । उन्होंने विशेष ढ़ंग से Fash-P cum Mime प्रस्तुत किया। इनब्लूम की धूम से Psenti-semities भी बच नहीं पाए। भागीरथ भवन के छात्रों ने fash-p तथा मनोरंजक नृत्य के द्वारा क्रार्यक्रम में जान डाल दी। । विश्वकर्मा भवन के नृत्य ने तो जनता को अचंभित और मंत्रमुग्ध कर दिया । शंकर भवन के द्वारा प्रस्तुत Mime तथा सुरीले गानों को भी वाहवाही मिली। अंत में कृष्णा भवन के रंगारंग नृत्य के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। बिट्सियन जनता ने इस कार्यक्रम का भरपूर आनन्द उठाया। पूरे प्रर्दशन के आधार पर राम को प्रथम तथा गाँधी और मीरा भवन को द्वितीय स्थान दिया गया। भागीरथ भवन को Fash-P,गाँधी भवन को नृत्य तथा व्यास भवन को गानों के लिए पुरस्कृत किया गया।

संगम नाइट

यूँ तो पिछले सेमेस्टर कई cultural nites हुई जिसमें एक थी संगम नाइट। इसकी शुरुआत "लागा चुनरी मे दाग" से हुई। तत्पश्चात बिट्स के डायरेक्टर श्री माहेश्वरी ने द्वीप प्रज्जवलित कर नाइट का औपचारिक शुभारंभ किया। नाइट मे तीन म्यूजिक क्लब के सदस्यों की प्रस्तुति को लेकर कुछ ज्यादा ही उत्साह था। श्रेयस द्वारा "आदत" और "when you say nothing at all" एवं अनिरुद्ध द्वारा गाए "माएरी" पर लोग झूमने लगे। आनंद शंकर के गाए "तेरी दीवानी" को सुनकर तो लोग उनमें और कैलाश खैर में फर्क ही महसूस नहीं कर पा रहे थे और once more, once more के नारों से ऑडी गूँज उठा। Psenti-semite वैभव पाँडे ने अपने गिटार से समाँ बाँधे रखा। संगम माइम क्लब की प्रस्तुति जो कि घोटू बिट्सियन बच्चों के साथ हो रहे हादसे पर आधारित थी, ने तो लोगों को इस कदर वशीभूत कर दिया कि लोग पलक तक नहीं झपका पाए। इसमें जासूस बने सुरभि और निखिल के अभिनय को लोगों ने बहुत पसंद किया। यू वी लाइट वाले सीन पर तो लोग आश्चर्य से पागल ही हो गए। अरमान, आकाश की comic anchoring और निराले अंदाज ने कार्यक्रमों के बीच में भी समाँ बांधकर रखा। गोलमाल के "क्यों आगे पीछे डोलते हो" और "साँवरिया" गाने पर हुए डाँस को लोगों ने बहुत सराहा। कुल मिलाकर संगम द्वारा यह एक मनोरंजक प्रस्तुति थी ।

मरूधरा नाइट

मरूधरा "मरू की धरा" जिसकी धरा पर पिलानी है और हमारा बिट्स है। जब भी सांस्कृतिक प्रदर्शन की बात आती है तो मरूधरा के सदस्य अद्वितीय राजस्थानी संस्कृति और सौन्दर्य का प्रदर्शन करते हुए बिट्स जनता को ऐसा मुग्ध कर देते हैं कि हर कोई उसकी प्रशंसा किए बगैर नहीं रहता। हमेशा की तरह इस बार भी मरूधरा नाईट 2006 अनोखी थी। मरूधरा नाईट की शुरूआत वन्दना से हुई, यह वन्दना भी सामान्य तरीके से नहीं बल्कि अद्वितीय तरीके से की गयी थी। इसे प्रथम वर्षीय अंकिता, सुदीप्ता और तृतीय वर्षीय प्रिया ने प्रस्तुत किया। वन्दना एक प्रतिबिम्ब डांस था। यह डांस पर्दे के पीछे किया गया था। दूसरी प्रस्तुति भवई डांस जिसमें प्रथम वर्षीय महक ने अनोखा प्रदर्शन किया। डांस में उसने मटकी और दीपक हाथ में लेकर राजस्थानी संस्कृति को दिखाने की कोशिश की। उसके बाद मदपलय था, जिसमें उन्होंने समान ध्वनि के नये और पुराने गानों को लेकर आज के और पुराने समय के कलाकारों के अनुसार डांस किया। इसके बाद कालबेलिया डांस था। इसके बाद "नीले नीले अम्बर पर" गाने की धुन पर पूरा ऑडी गूँज उठा। इसके बाद "सतरंगी रे" "आयो रे आयो मारो ढोलना" जैसे गानों पर डांस हुआ। अन्त में जतिन ने विभिन्न क्रिकेटरों की नकल में क्रिकेट की कमेंटरी की जिसे लोग एकटक देखते रह गये और हँसी के ठहाकों से ऑडी गूँज उठा। 15 मिनट तक उसने अकेले यह प्रस्तुति दी। इस तरह इस बार भी मरूधरा नाइट काफी मनोरंजक और सफल रही।

म्यूजिक नाइट

ऑडी में खचाखच भरी बिट्सियन जनता और संगीत की मधुरिम लहरियों पर जनता का अपने आपको नाचने गाने से रोक न पाना! अभी तक आप समझ गए होंगे कि हम बात कर रहे हैं म्यूजिक क्लब की शानदार प्रास्तुति म्यूजिक नाइट की, जो हर बार एक नये जोश, रंग और मस्ती के साथ जनता का मनोरंजन करती ही है साथ ही psenti नाइट के दिन जनता को भावनाओं के आवेश में डुबा देती हैं। अध्ययन की एकरसता को भंग करने के लिए म्यूजिक नाइट का हर बिट्सियन को बेसब्री से इन्तजार रहता है । म्यूजिक नाइट बिट्सियन के जीवन का एक अभिन्न अंग बन गई हैं जो उसके दिल में एक मीठी याद के रुप में हमेशा के लिए जगह बना लेती हैं।

स्थापना दिवस

विभिन्न संस्कृतियों के संगम का प्रतीक, स्थापना दिवस इस बार फिर हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर मौर्य विहार के सदस्यों के द्वारा सरस्वती पूजा का आयोजन किया गया। माँ शारदा के पूजन के इस पावन पर्व पर पर ऐसा लगा मानो भारत की संस्कृति बिट्स के सभा भवन में अपना अलौकिक साक्षात्कार करा रही हो। विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति श्री एल. के. माहेश्वरी ने दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। उन्होंने संस्था के विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए बिट्स में उनके लिए उपलब्ध अवसरों से अवगत कराया एवं प्रेरक विचारों से विद्यार्थियों में जोश भर दिया। फिर शुरू हुआ एक ऐसा कार्यक्रम जो विप्रवासियों की प्रतिभा का प्रतिनिधित्व कर रहा था। भारतीय संस्कृति की झलक को बेहद खूबसूरत तरीास्तुत किया गया। हर प्रदेश की संस्कृति का जीवन्त चित्रण कर उन्होंने साबित कर दिया कि बिटसियन्स इस क्षेत्रमें भी किसी से कम नही हें। विप्रवासियों की यह प्रतिभा उन्हें बाकी तकनीकी संस्थानों से अलग करती है। हम आशा करते हैं कि हम सभी इस परम्परा,जो कि संस्कृति के प्रति हमारी जिम्मेदारी भी है, का निर्वाह करते रहेंगे। स्थापना दिवस का यह सराहनीय कार्यक्रम मनमोहक रहा।

दीपावली

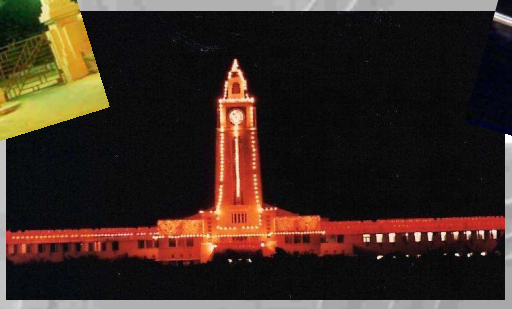

खुशियों भरा होता है वो दिन, जगमगा उठती है वो शाम। कोई हो दुःखी, या हो गमगीन, खिल उठता हैं उसका चेहरा,इस पावन दिन।सही समझा, शमा है दीपावली की, वो भी विट्स कि दिपावली। पूरे भारतवर्ष की तरह विट्स भी इस दिन जगमगा उठता है। सभी भवन में जलती है रंगीन बत्तीयाँ, CLOCK TOWER के तो कहने ही क्या। जैसे जैसे शाम अपने रंग में आती है छात्रों का जोश भी बढता ही जाता हैं। भवन में पटाखे जलाने पर पाबंदी होने के कारण लोग अपना रूख कनॉट की तरफ करते हैं। जबरदस्त भीड़ के बीच पटाखे जलाए जाते हैं। गूँज उठती है पूरी विट्स, जगमगा उठता है पूरा आसमान। पटाखों से उठते धुँए से भरे कनॉट में घुटन महसूस होती है पर फिर भी किसी के जोश में कोई कमी नहीं आती। भरपूर पटाखे जलाने के बाद लोग वहाँ खाना खाते हैं, क्योंकि उस दिन मेस बंद रहती हैं फिर जैसे जैसे रात अपना दायरा बढ़ाती है जनता अपने भवन की तरफ प्रस्थान करने लगती हैं। 12 बजे तक कनॉट फिर से सुनसान हो जाता है।जनता फिर से लग जाती है अपने अगले टेस्ट की तैयारी में।पर इस के बीच बहुत से छात्रों के घर चले जाने से माहौल की रंगत में कुछ कमी महसूस होती है।

होली

रंगों का त्योहार होली, हर वर्ष की तरह इस बार भी अत्यंत हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। 3 मार्च की संध्या 7:30 बजे पूजा मैदान में होलिका दहन की गई। इस शुभ अवसर पर कुलपति एल. के. महेश्वरी समेत काफी शिक्षकगण एवं विधार्थी मौजूद थे। अगले दिन सुबह से ही होली का माहौल छाने लगा और छात्रावासों में बच्चों ने एक दूसरे को रंग गुलाल लगाना शुरू कर दिया। जो कोई भी रंग खेलने से कतरा रहे थे, उन्हें पकड़ पकड़ कर रंग से भूत बना दिया गया। होली के दिन ना जाने कितने ही पजामों और शर्टो को शहीद होना पड़ा और फिर उनको पेड़ों के हवाले कर दिया। बच्चे टोली बना कर हर भवन में घूम रहे थे और सबको रंगों से सराबोर कर रहे थे और साथ ही साथ नारे भी लगाए जा रहे थे। भवन में बच्चे गड्ढे में कीचड़ बना कर एक दूसरे को उसमें ड़ाल रहे थे। लोगों का जोश यहाँ भी नहीं थमा और वे कीचड़ में ही कबड्डी खेलने लगे और होली के गानों पर नाचने भी लगे। इस बार होली में रंग से भरे गुब्बारे भी बहुत फेंके गये। सुबह 9 बजे शुरू हुआ होली का यह जोश दिन के 12 बजते बजते खत्म होने लगा था। कुल मिला कर होली का त्यौहार काफी प्रेम भाव और शालीनता से मनाया गया।

गणेश चतुर्थी

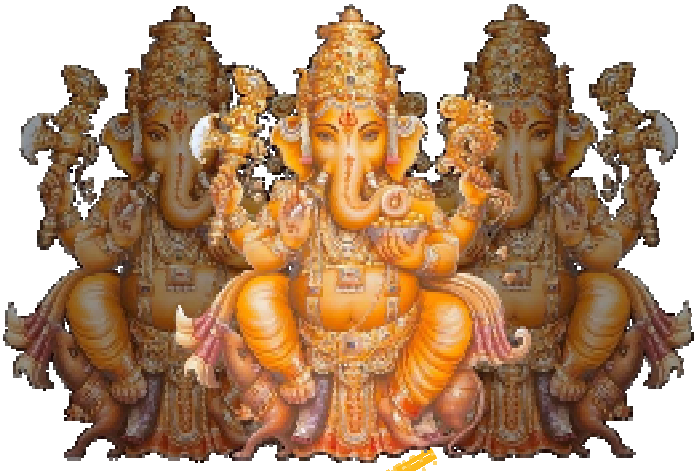

बिप्रविस में हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी गणेश चतुर्थी की धूम देखते ही बनी। महाराष्ट्र मण्डल द्वारा पूजा मैदान में आयोजित गणेश पूजन ने बिट्स की व्यस्त जनता को अपनी ओर आकर्षित किया। अनेक प्रोफेसरों की उपस्थिति ने समारोह को सफलता के शिखर तक पहुँचाया। गणेश प्रतिमा की स्थापना से पहले मण्डल पूरे कैम्पस में गणपति बप्पा मोरिया के नारों एवं नाच गाने के साथ घूमा। पूजा मैदान के पास एक घर में गणेश प्रतिमा की स्थापना की गयी। उत्सव के साथ साथ कई सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुए। छोटे बच्चों के लिए फैन्सी ड्रेस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। MEits एवं प्रोफेसर द्वारा शेरों-शायरी का सुन्दर प्रदर्शन हुआ। कई नृत्य एवं ड्रामा भी हुए। अंतिम दिन मात्र संगीत के द्वारा एक हास्य ड्रामा प्रस्तुत किया गया।महाराष्ट्र के प्रसिद्ध हास्य लेखक पु. ल. देशपांडे के विठठल तो आला आला ड्रामा को महाराष्ट्र मण्डल ने साकार रूप दिया।उसी गणपति बप्पा मोरिया की धूम के साथ और अगले वर्ष जल्दी आने की कामना मन में लिए गणेश प्रतिमा का विसर्जन किया गया।

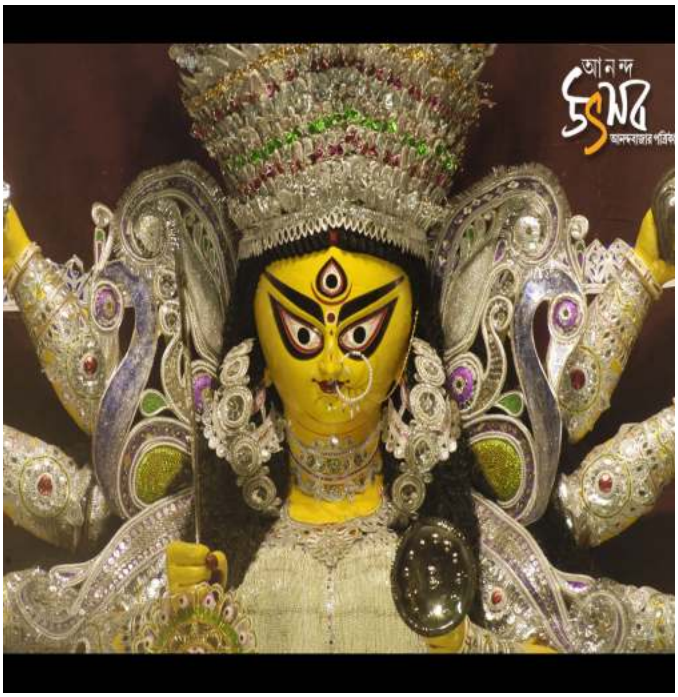

दुर्गा-पूजा

भारतवर्ष सदियों से एक धर्म अनुयायी देश रहा है और आज भी जगत विधाता भारत-परिवार यही परंपरा निभाता आ रहा है। आज के इस भाग दौड़ की जिंदगी में भी इंसान के हृदय में ईश्वर के प्रति श्रद्धा विद्यमान है। इसका साक्षात उदाहरण देखने को मिला हमारे अपने कॉलेज बिट्स पिलानी में आयोजित दुर्गा-पूजा के दौरान। मौरू-छाया द्वारा आयोजित की गई दुर्गा-पूजा सराहनीय थी।इस बार बिट्स और सीरी कैम्पस ने संयुक्त रूप से पूजा का आयोजन कराया। इस संपूर्ण आयोजन की शुरूआत सीकर से माता की मूर्ति लाने से हुई। दुर्गा-पूजा की शुरूआत सप्तमी से हुई। अष्ठमी को पूजा का मुख्य आयोजन था। इस बार दुर्गा-पूजा के दौरान अनेक कार्यक्रम हुए। धुनुषी नामक नाच को माता के सामने प्रस्तुत किया गया। इसके अलावा कुँवारी नाच एक बालिका द्वारा प्रस्तुत किया गया। प्रमुख रूप से एक नृत्य-नाटक हुआ जिसके अंतर्गत एक कहानी को नृत्य के रूप में प्रस्तुत किया गया। इस बार एक और बदलाव देखने में आया। अनेक विद्यार्थीयों एवं प्रोफेसरों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।प्रोफेसरों के लिए खासकर फैंसी-ड्रेस प्रतियोगिता आयोजित कराई गई थी। पूजा के पश्चात सभी भक्तों को प्रसाद बाँटा गया। अंततः दशमी के दिन माताजी की मूर्ति को विसर्जित कर दिया गया। इस तरह मौरूछाया ने दुर्गा-पूजा का सफल आयोजन करा कर जता दिया कि बिट्स

कहीं पढ़ा था समय उस व्यक्ति की तरह होता है जिसे कभी पीछे से पकड़ा नहीं जा सकता। अत: यदि उसे पकड़ना है तो या तो समय के आगे रहो या समय के साथ। पर आज यह मानो वास्तविकता की नई कहानी कहता हुआ सा प्रतीत हो रहा है। कारण – यह अंतिम सत्र जो न जाने कितनी यादों को तरोताजा कर देता है, न जाने कितनी ही घटनायें आँखों के सामने चलचित्र के माफिक आने लगती हैं और याद दिलाने लगती हैं कुछ पलों की। पल कुछ गम के, कुछ खुशी के, कुछ हँसी के, तो कुछ रूदन के। कहीं जुदाई के तो कहीं नये लोगों से अपनी जिंदगी के जुड़ाव के।

'संस्मरण' लिखने की बात मन में आते ही सोचा कि कुछ ऐसा लिखूँ जिसमे एक औसत विप्रवासी की तरह बितायी गयी जिंदगी का निचोड़ हो, कुछ अनुभवों की चाशनी हो और हो अपनी गलतियों का उल्लेख ताकि पाठक उन्हीं गलतियों को दुहराने की गलतियाँ न करें। पर फिर याद आता है विप्रविस का लचीलापन जहाँ कुछ भी गलत नहीं, सब कुछ सही है बस देखने का नजरिया अलग होता है।

याद आता है प्रथम सत्र। नये लोग, नये लोगों में दोस्त बनाने की मशक्कत, अपना बनाने की जद्दोजहद, जान पहचान बढ़ाने की जद्दोजहद। वैसे शायद इस जद्दोजहद का दोष अपने कक्ष को देना चाहूँगा जिसकी पिछली खिड़की मुझे 'स्टूडेण्ट यूनियन ब्लाक' का दर्शन कराती और जगाती एक नई इच्छा, स्टूडेण्ट पॉलीटिक्स में संलग्न होने की और अपने आप को प्रेसीडेंट या जनरल सेकेट्ररी के रूप में देखने की। शायद इसी जद्दोजहद में एक पूरा सत्र बीत गया और वो समय आया जिसके बाद व्यक्ति की पहचान, उसकी विशेषता, उसकी प्रतिभा से न होकर कुछ अंको से बन जाती है। क्या कुछ अंक किसी व्यक्ति का सही मूल्यांकन कर सकते हैं ? और फिर उन कुछ अंक से व्यक्ति की पहचान डिफाइन करना सही है? खैर, फिर आया दूसरा सत्र जहाँ बनाए दोस्तों में से कुछ से दोस्ती बढी, कुछ को बीतते समय के साथ जानने का मौका मिला और कुछ से दोस्ती टूटी। याद आते हैं – एक "व्यक्ति विशेष" के पासवर्ड हैक करने की बेकार कोशिश, व्यक्ति विशेष से आए किसी (even food) तक के इंतजार में घंटे में बीसियों बार telnet चेक करना या फिर क्लासेज के चक्कर काटते रहना कि कहीं उनसे मुलाकात हो जाए।

जहाँ तीसरे सत्र में " मौर्य-विहार" का अस्तित्व प्रकाश में आया वहीं उसके प्रति अपने समर्पण, उसे अन्य Assoc की तरह उभारना, और मौर्यविहार के प्रति उत्पन्न भ्रान्तियों को झूठा साबित करते हुए कुछ अच्छा करने का प्रयास भी याद आता है। चौथे सत्र में अपने discipline के दो courses के साथ सामना हुआ तो थोड़ी समझदारी भी आई- कुछ अच्छा करने की। इन्हीं सत्रों में अच्छे दोस्तों की पहचान भी बनी ।

तीसरे वर्ष दो जिम्मेदारियाँ मेरे कंधों पर डाली गई। CDC's के pressure के साथ ही मौर्यविहार president पद की जिम्मेदारी का निर्वाहन सचमुच कठिन था और इसी कठिनाई का पता शायद मुझे तब चला, जब grades हाथों से जा चुके थे और दिख रहे थे CGPA के रूप में, कागज़ के एक टुकड़े पर ।फिर निभाई मैंने AHP के Coordinatorship की जिम्मेवारी भी। कम परंतु उत्साहित सदस्यों का समन्वयम में सचमुच मजा आया। याद आता है तो रात के 4 बजे तक जगना, नए डिजाइन्स की तलाश करना और हर Article में कुछ अलग करने का जुनून।

ऐसा लग रहा है संस्मरण के नाम पर मैंने दिया है अपने टूटे हुए सपनों का लेखा जोखा पीटा है अपनी गलतियों का । पर जहाँ विप्रविस में अपने कई सपनों को टूटा हुआ पाया है वहीं इस Cross Culture environment में रहकर बहुत कुछ सीखा भी है। सीखी है मैंने दोस्ती, सीखा है मैंने जुनून कुछ करने की इच्छा का और सबसे बड़ी बात, सीखी है मैंने सपनों के टूटते रहने पर भी नए सपनों को देखने की आदत डालने की कला का। सीखा है मैंने हर हार में एक जीत देखने का, ताकि उस हार के कारण को अपने आप से अलग करूँ और हर कदम एक ऐसी जीत की ओर बढ़ाऊँ जो पिछली बार से ली हुई सबक का हिस्सा हो और सबसे बड़ी चीज सीखी है मैंने किसी भी समय उतना ही confident रहने का चाहे अंदर ही अंदर खुद को कितना भी हीन अनुभव कर रहे हों। अंततः विप्रविस का मैं शुक्रगुजार होऊँगा जिसने मुझे जीने की नई राह दिखाई , जिसने मुझे जीने का नया तरीका दिया। अपनी कलम को मै यहीं विराम देता हूँ । यह मेरा Psenti सेम है और विट्स से बिछड़ने का समय आ गया है बस अगर कुछ शेष रह गयीं हैं तो वो है **यादें** .....

अलविदा

अनन्त शशांक

जलतरंग बजता, जब चुंबन करता प्याले को प्याला,
पीणा झंकृत होती, चलती जब रूनझुन साकीबाला,
डाँट-डपट मधुविक्रेता की ध्वनित पखावज करती है;
मधुरव से मधु की मादकता और बढ़ाती मधुशाला ।।

"भारत में प्रजातंत्र दिखावा मात्र है"

"नेताओं ने गाँधी की कसम खेची,
कवियों ने निराला की कलम खेची।
मत पूछिए इस दौर में क्या क्या न बिका,
इंसानों ने आँखों की शरम खेची।।"

और इस शरम बेचने का परचम आज पूरे भारतवर्ष के धरातल पर जोर शोर से लहरा रहा है। आज के इस अंतरिक्ष युग में जो देश विस्तारवाद, प्रजातंत्रवाद, तथा मानवीय मूल्यों की ओर अग्रसर होने का संकल्प लेकर पला था वही देश आज घिनौनी राजनीति तथा स्वार्थी नेताओं के कुचक्रों की खाईयों में गिरकर लहुलुहान हो रहा है, जिसमें कभी बिहार, कभी अयोध्या, तो कभी गुजरात जैसे भारत के अभिन्न अँग गिरकर छटपटा रहे हैं। अरस्तु का यह कथन "प्रजातंत्र मूर्खों की राज्यपद्धति है"। उस समय और भी अधिक सारयुक्त तथा सत्य प्रतीत होता है जब आए दिन जनता के यशस्वी प्रतिनिधि अपने क्षुद्र स्वार्थों के कारण अपने समस्त नैतिक दायित्त्वों को ताक पर रख दल बदल के जादू द्वारा सरकारों को बनाने बिगाड़ने का चमत्कार किया करते हैं। ऐसे में ये पंक्तियाँ नितांत प्रासंगिक हैं :

"क्या निकालेंगे भंवर से वे हमारी कश्तियाँ,
छिप कर बैठी जिनके दिलों में आपसी तकरार हो,
कैसे करेंगे अब हम आँधियों का सामना,
पाँव के नीचे अगर, रेत की दीवार हो।"

अब्राहिम लिंकन के अनुसार प्रजातंत्र में प्रजा की, प्रजा के लिए तथा प्रजा के द्वारा निर्वाचित सरकार कार्य करती है परंतु आज के परिवेश में यदि मैं यह कहूँ कि भारतीय प्रजातंत्र में दिखावे की, दिखावे के लिए तथा दिखावे के द्वारा निर्वाचित सरकार कार्य करती है तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

एक ओर जब पूरा गुजरात सांप्रदायिक दंगों की मार से जूझ रहा था और आँध्र प्रदेश में किसान भूख से तड़प कर आत्मदाह कर रहे थे तब भारत की 40% से भी अधिक जनता गरीबी रेखा से नीचे अपना निर्वाह कर रही थी तब हमारी NDA सरकार दिल्ली में बैठकर India Shining के नारे लगा रही थी। अब आप ही बताइए क्या यह उस भारतीय प्रजातंत्र का अपमान नहीं जिसका सपना महान गाँधी तथा पंडित नेहरू ने देखा था ?

यह तो सर्वविदित है कि आज देश की केवल 30% जनता मतदान करती है और 70% जनसंख्या तटस्थ भाव से बैठी रहती है। यही कारण है कि आज देश की संसद में अधिकतर माफिया, रिश्वतखोर, स्वार्थी, तथा दागी मंत्रियों का वर्चस्व है, जो जनता के भविष्य का निर्धारण करते हैं क्योंकि वोट देने वाली 30% जनता पर उन्हीं का प्रभुत्व है। केवल एक तिहाई जनमत के आधार पर कानून बनाने वाली सरकार प्रजातंत्र के नाम पर दिखावा नहीं तो और क्या है ?

यह वही भारतवर्ष है जिसे प्रजातंत्र कहने में गर्व का अनुभव होता था और जहाँ लोगों के हृदयों में अपने नेताओं के प्रति एक गहरी आस्था होती थी, एक सम्मान होता था। जाने वह साँचा कहाँ खो गया जिसमें पूज्य गाँधी जी, पंडित नेहरू तथा सुभाष चंद्र बोस जैसे चरित्र ढलते थे। अंत में दुष्यंत कुमार के शब्दों में मैं अपनी वाणी को विराम देना चाहूँगा

"हो गई है पीर पर्वत सी, पिघलनी चाहिए,
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए,
मेरे सीने में नहीं, तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।"

दीपांशु सैनी
2005A4PS126

हाथों में आने से पहले नाज़ दिखाएगा प्याला,
अधरों पर आने से पहले अदा दिखाएगी हाला,
बहुतेरे इनकार करेगा साकी आने से पहले;
पथिक, न घबरा जाना, पहले मान करेगी मधुशाला ।।

घटिया प्रेरक प्रसंग

हिन्दी प्रेस क्लब की बेहद मांग पर मैंने कुछ ऐसा लिखने का सोचा कि जिसे पढ़कर कोई भी अपने आप को श्रेष्ठ लेखक या कवि से कम नहीं आँकेगा। मेरा पहला प्रश्न स्वयं से और सबसे, "क्या है सर्वाधिक महत्वपूर्ण?" सृजन, पाठन या फिर रचना का मैगजीन में छपना? नहीं पता! किन्तु रचना ही नहीं होगी तो छपेगा क्या और छपेगा नहीं तो कोई पढ़ेगा क्या ?? खैर पढ़ने के लिए किसी को बाध्य तो नहीं किया जा सकता लेकिन जब कोई पढ़ेगा ही नहीं तब तक, रचना अच्छी थी या बुरी कोई कैसे कह सकता है ? अर्थात् पाठक ही अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं।

अच्छे लेखन की कला पर बहुत सी किताबें मिल जाएँगी। अक्सर अखबारों में भी इस पर "फीचर" या लेख देखने को मिलते हैं लेकिन घटिया लेखन पर मैंने अभी तक कोई रचना नहीं देखी, आपने भी नहीं देखी होगी। समझ नहीं आता फिर इतने घटिया लेख कैसे छप जाते हैं? बिना प्रशिक्षण के श्रेष्ठ कोटि का घटिया लेखन अपने आप में चौंकाने वाली बात है। बिट्स जैसे संस्थान में, विद्यार्थियों के हित में , ऐसा कोर्स आरंभ करना अपरिहार्य लगता है। अतः इस पत्रिका के माध्यम से 'घटिया लेखन' के रहस्य बताने का प्रयास करता हूँ ताकि गुरू धर्म के साथ न्याय कर सकूँ।

1. लिखने का मूल उद्देश्य निर्धारित कर लिजिए। सब चाहते हैं कि लोग लेखक को ज्ञानी, सर्वज्ञ और दृष्टा मानें। इसके लिए ज्ञान से लबालब वाक्यों का प्रयोग अवश्य करना चाहिए। यह एक मानी हुई बात है कि यदि आप कठिन शब्द और लम्बे-लम्बे उलझे वाक्य नहीं लिखेंगे तो पाठक आपको हरगिज विद्वान नहीं मानेगा। कठिन शब्द ही गहरे अर्थों और उलझे भावों का भार सहन कर सकते हैं।
2. पाठकों की चिन्ता नहीं करनी चाहिए। अगर आप पाठकों की चिन्ता करेंगे तो अपना चिन्तन क्या खाक करेंगे! भाषण कला का एक सूत्र होता है कि यह मानकर चलें कि सामने का मैदान खाली है। अकेले आप ही बोल रहे हैं और कोई श्रोता नहीं। अगर लाख कोशिशों के बावजूद दर्शक दिखाई दे भी जाए तो मानकर चलिए कि सभी श्रोता मूर्ख हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि आप जिस मात्रा में अपने लेखन में पाठकों को अप्रसंगिक बनाते जाएँगे, उसी मात्रा में आपको सफलता मिलती जाएगी।
3. गरिष्ठ लेखन में विश्वास कीजिए और उसके लिए बड़े-बड़े लेखकों या कवियों के उन अंशों को लिख लीजिए जो आपकी समझ में न आए हों। पाठकों को भी समझ में नहीं आएँगे और वे आपको विद्वान मान लेंगे।
4. घटिया लेखन का एक और सूत्र है जो चमत्कारिक असर पैदा करता है। किन्हीं दो-तीन बातों को चुन लीजिए और बार-बार तरह-तरह से दोहराते रहिये। बार-बार पढ़कर पाठक सो जाएगा। है न चमत्कार!
5. वरिष्ठ लेखकों में एक और गुण मैंने पाया है। जो बात उन्हें कहनी होती है उसे वे अंत में लिखते हैं ताकि पाठकों की दिलचस्पी बनी रहे।

जैसा कि मैंने पहले भी लिखा कि संस्थान में घटिया लेखन का प्रशिक्षण देना संभव नहीं है लेकिन जहाँ चाह, वहाँ राह। इच्छुक नवोदित रचनाकारों को टी.वी, लोकल अखबार और पत्रिकाएँ भी समुचित प्रोत्साहन देते हैं। अन्ततः यह पत्रिका तो आप जैसे लोगों द्वारा, आप जैसे लोगों के लिए ही बनाई जाती है। कुछ भी लिखिए और लिखते रहिए। यहाँ घटिया लेखन और लेखकों का भविष्य उज्जवल है। एवमस्तु।।

आशा है यह लेख स्वप्रेरण BITS में ऐसा आंदोलन लाएगा कि भविष्य में हिन्दी प्रेस क्लब का समय रचना ढूढ़ने में नहीं बल्कि छाँटने में जाएगा।

निखिल प्रकाश सक्सेना
सुशील कुमार

P.J. GALLERIA...

धीरू भाई अंबानी (स्वर्ग से)- ' बेटा मुकेश , कैसा चल रहा है अपना रिलायंस ?'
मुकेश - 'हैलो , कौन बोल रहा है, ठीक से सुनाई नहीं दे रहा है, call me on Hutch mobile.'

मेहंदी-रंजित मृदुल हथेली
पर माणिक मधु का प्याला,
अंगूरी अवगुंठन डाले

स्वर्ण-वर्ण साकीबाला,
पाव भैंजनी, जामा नीला
डाट डटे पीनेवाले;

इन्द्रधनुष से होड़ लगाती
आज रँगीली मधुशाला ।।

आइए, एक बार फिर सोचें

गत साठ वर्षों में हमारे देश ने निस्संदेह सर्वांगीण प्रगति की है। इसका प्रतिफल जो आज हम भोग रहे हैं, उसका एक बड़ा श्रेय हमारी जनतांत्रिक व्यवस्था को जाता है। उदाहरण चीन को ही ले लीजिए--साम्यवादी कठोर शासकों के काल में इसका विकास तो द्रुत गति से हुआ, परंतु जनसाधारण वैचारिक, आर्थिक एवं राजनैतिक स्वतंत्रता के अभाव में इस रस का आस्वादन करने से वंचित रह गया। दक्षिण एशिया के हर देश में समय-समय पर गृह युद्ध हुए हैं, लोकतंत्र का गला घोंटा गया है, विद्रोही सेना ने तख्ता पलटा है। भारत के लोकतंत्र को यह श्रेय अवश्य जाता है कि अब तक, इमरजेंसी के अपवाद को छोड़कर, इसने अपने मौलिक सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं किया और देश को एक स्थायी एवं सुदृढ़ राजनैतिक व्यवस्था दी. परंतु वस्तुस्थिति इतनी हर्षोत्पादक भी नहीं है। सच तो यह है कि हमारे लोकतंत्र को बाहर से तो नहीं, अंदर से जंग लग चुकी है। समन्वय और सम्मेलन की नीति की आड़ में हमने उन असामाजिक तत्वों को भी अपने साथ शामिल कर लिया है, जिन्हें आज न्याय के कटघरे मे खड़ा होना चाहिए था। 'राजनीति का अपराधीकरण या अपराधियों का राजनीतिकरण' एक ऐसा समसामायिक मुद्दा है जिस पर समय-समय पर बुद्धिजीवियों ने अपने प्रखर एवं ओजस्वी विचार प्रकट किए हैं। परंतु हमारी आवाज़ में शोर ज़्यादा है और विवेक कम।

बात सबसे छोटी चीज़ की--आखिर अपराधी है कौन? परिभाषा कहती है कि देश की न्याय व्यवस्था के प्रतिकूल आचरण करने वाला, उसका उल्लंघन करने वाला, अपराधी है। अगर ऐसा है तो आरक्षण नीति का विरोध छात्र नेता, सिंगुर और नंदिग्राम में नीतियों के विरुद्ध प्रदर्शन करते हुए लोग, पूर्वोत्तर में सेना द्वारा विशेषाधिकार के नाम पर किए गए अत्याचारों के खिलाफ आवाज़ उठाती इरम शर्मिला--यह सब अपराधी हैं। और इसी तर्क के अनुसार गुजरात में हज़ारों निर्दोष मुसलमानों का संहार कर डालने वाले नरेंद्र मोदी अपराधी नहीं हैं क्योंकि उन्होंने न्यायिक परिधि के भीतर रह कर ही यह कुकृत्य किए। बात सत्यासत्य की नहीं है, बात है कानून के दावपेचों की।किसी भी समाज में कानून इसलिए बनते हैं ताकि मानवाधिकारों की, राज्यधर्म की रक्षा के लिए कुछ नियम बने और उनका उल्लंघन करने वाले के लिए दंड का विधान हो। पर वर्तमान भारत में हाकिमों ने पहले अपने लिए कानूनों को बनाया, उसे तोड़ने-मरोड़ने के लिए कई पेंच डाले और फिर समाज का विवेक जहाँ बैठ सकता था, उसे उन रिक्त स्थानों पर भर दिया गया। फलत: यही ज्वर राजनीति के बढ़ते अपराधीकरण का कारण बना।

चुनाव के समय, किसी भी पार्टी के चंदादाताओं की सूची देखिए--कुछ ऐसे बड़े कद्रदान अवश्य मिलेंगे जिनका व्यवसाय अपराध, आतंकवाद, तस्करी, कत्लेआम और यहाँ तक कि डकैती है। परंतु पुलिस कुछ कर नहीं सकती। कारण यह कि किसी भी राजनैतिक दल की विचारों सहमति एवं उसके चुनाव कोष में अनुदान देना आपका निजी फैसला है। हर राज्य में, हर पार्टी आजकल तख्त के पीछे से अगर शासन चला रही है--तो इन बाहुबलियों के कारण। इसी कारण से बिहार सरकार गाँधारी की तरह आँखों पर पट्टी बाँधे रहती है जब अपहरण माफिया राज्य के आला डॉक्टरों को अगवा कर फिरौती माँगती है। सरकार के काले कारनामों का पर्दाफाश करने वाले सत्येन्द्र दूबे को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ता है। तमिलनाडू में श्री वाइको LTTE जैसे आतंकवादी गिरोहों से हमदर्दी जताते हैं। आप और हम इनके खिलाफ कुछ इसलिए नहीं कर सकते क्योंकि न्याय व्यवस्था में कई शॉर्टकट हैं। कल को कोई बाहुबली गिरफ्तार होता है तो उसके खिलाफ साक्ष्य देने वाले पीछे हट जाते हैं। कारण यही है कि वही सरकार जो आपको पुलिस की कड़ी सुरक्षा देने का आश्वासन देती है--वही दूसरी ओर आपकी छवि धूमिल करने के लिए हलफिया बयान देने वाले सौ झूठे गवाहों की सेना भी खड़ी करती हैं। शायद आपके प्राणों को भी खतरा हो सकता है। समाधान क्या है? 'रंग दे बसंती' और 'क्रांतिवीर' की तरह क्या हम भी हथियार उठा इन पापियों का अंत कर दें? लेकिन इससे वे तो मर जाएँगे, परंतु हमारी न्याय व्यवस्था, प्रशासन एवं राजनीति हमारी ही अराजकता की लपटों में भस्म हो जाएँगे। समय की माँग यह है कि इस लंगड़े हो चुके प्रशासन का जीर्णोद्धार हो। हममें क्राँति अवश्य हो पर उसमें आवेश कम, मौलिकता ज़्यादा हो। हम लड़ें परंतु उन्हीं हथियारों से जिन्हें इन्होंने मंद कर रखा है।

देश की आत्मा अभी तक नहीं मरी है। "जेसिका लाल, प्रियदर्शिनी मट्टू एवं सुभाष चंद्र" के मुकदमों में अपराधियों को दंड दिलाने के लिए जनता के अथक परिश्रम ने यह प्रमाणित कर दिया है कि बड़े से बड़े हाथ, जनता की इच्छा के विरुद्ध किसी भी पापी को नहीं बचा सकते। भारत के लोकतंत्र ने हम सबको बहुत कुछ दिया है। इससे इस भीषण रोग से बचाने के लिए आइए हम सब एकजुट हो हाथ बढ़ाएँ और भारत का भविष्य, जो अपने भीतर एक बेहतर कल का वादा कर रहा है, उसे सुरक्षित करें।

शैलेश झा

बहती हाला देखी, देखो लपट उठाती अब हाला,
देखो प्याला अब छूते ही होंठ जला देनेवाला;
'होंठ नहीं, सब देह दहे, पर पीने को दो बूँद मिले' -
ऐसे मधु के दीवानों को आज बुलाती मधुशाला ।।

ये है मेरी कहानी.....खामोश जिंदगानी

31 मई, 2003-वो दिन जिसने मेरी जिंदगी बदल दी। एक सामान्य, मध्यम-वर्ग के लड़के ने झारखण्ड में टॉप किया। हर अखबार में मेरा इंटरव्यू छपा-ये सब देखकर मुझे लगा कि मैं ख्वाब में हूँ, पर वो सच्चाई थी। वैसे तो मैंने I.I.T. निकालने के लिए एक साल drop करने का सोचा था, पर जब B.I.T.S के नामांकन-प्रणाली के बारे में सुना, तो यहाँ आने का मन बना लिया। मुझे आज भी 29 जुलाई की वो सुबह याद है जब मैं Reception पर पहुँचा और मुझे बिना बताये मेरी फोटो उतार ली गई। जिसकी वजह से आज भी किसी को अपना ID card नहीं दिखाता हूँ। दो दिन के Orientation Program ने बहुत बोर किया।

1st year की शुरूआत हुई Gen Bio की क्लास से। मुझे समझ में नहीं आता कि एक इंजीनियर Biology क्यों पढ़ता है?आगे सिलसिला शुरू हुआ सीनियरस से "Interaction" का। शुरू के 15 दिन तक चला। फिर टेस्ट सीरीज शुरू होने वाली थी। मैंने खूब तैयारी की उनके लिए। लेकिन उसके खत्म होते ही मुझे पता चला कि मेरी मेहनत बेकार थी। उसके बाद मैंने निश्चय किया अब पढ़ाई कम और मस्ती ज्यादा करूँगा(जो आज तक करता आ रहा हूँ।हा हा हा) BOSM देखकर मैं काफी उत्साहित हुआ परन्तु OASIS में घर चला गया। देखते ही देखते 1st sem निकल गया और अगले Sem आते ही Gradesheet मिली और पता चला कि मैं कितने पानी में हूँ। 2nd Sem में मैंने HPC join किया। क्लब में काफी मजा आता था। APOGEE के लिये मैं बहुत उत्सुक था,परन्तु प्रादर्शों को देखकर मेरा give-up हो गया। सब कुछ OHT था। प्रथम वर्ष के अन्त तक मेरे कुछ अच्छे दोस्त बने-कुछ क्लब में, और कुछ लोग जिनके साथ में मैंने wing बनायी। द्वितीय वर्ष के शुरूआत में ही एक खुशखबरी मिली-हमारा Assoc. मौर्य विहार बना। पहले कार्यक्रम के रूप में हमने अपने सीनियर्स को farewell दिया। मैं अपने 2nd year के OASIS को कभी भूल नहीं पाऊँगा। इतनी मस्ती मैंने पहले कभी नहीं की थी। चाहे OHP का काम हो या दोस्तों के साथ DJ, Audi जाना; हर तरह की मस्ती की मैंने। 2-2 में मैं, 2-1 की तरह Sac-Out नहीं मार पाया। APOGEE में प्रोजेक्ट करना चाहता था, पर किन्हीं अपरिहार्य कारणों के कारण नहीं कर पाया। BITS में मैं शायद पहली बार दुःखी हुआ। वो 5 दिन मैंने कैसे काटे मैं ही जानता हूँ। और हाँ, 2nd Sem का सबसे यादगार लम्हा था "Founders day" का Performance। "यमराज" के रोल में वो हँसी आज भी मुझे याद है जिससे पूरा Audi गूँज उठी थी। सबसे बड़ा चैलेंज तो था उसी दिन मौर्य विहार द्वारा सरस्वती पूजा का आयोजन।

2nd year के खत्म होते ही PS-1 के लिए NPL, दिल्ली जाना पड़ा। शुरू के कुछ दिन हमारे लिए संघर्षपूर्ण थे, परन्तु अच्छी PS instructor के कारण सारी कठिनाईयाँ दूर हो गई। हमारा 14 लोगों का ग्रुप इतना बढ़िया था कि कैसे 55 दिन बीत गये पता भी नहीं चला। PS-mates के बारें में इतना कुछ जानने को मिला, जैसा मैंने नहीं सोचा था।

तृतीय वर्ष की शुरूआत जिम्मेदारियों के बोझ के साथ हुई। मौर्य-विहार का 'सचिव पद' व OHP का 'समन्वयक' दोनों जिम्मेदारियाँ एक साथ निभाना काफी कठिन था। ऊपर से EEE के CDCs! पहली बार मौर्य-विहार ने Grub आयोजित किया, जिसे लोगों ने काफी सराहा। OHP के कार्य में काफी मजा आया। Issue's के नए रूप व नए Events कराने का काम आसान नहीं था। परंतु लोगों के Enthu व Co-operation ने मेरा काम काफी आसान कर दिया।दुःख की बात यह थी कि मैंने 2nd year में OASIS जैसे Enjoy किया था, वैसा इस बार नहीं कर पाया। इन सब चीजों में सेमेस्टर कैसे बीत गया, पता ही नहीं चला। Compre's में अच्छा करने के बावजूद अपने Acads को संभाल नहीं पाया। मेरा 3-2 Comparatively अच्छा था। APOGEE में किए गए प्रोजेक्ट ने काफी कुछ सिखाया। इस बार 'सरसवती पूजा' का आयेजन अपने कंधों पर था, जिसे मैंने बखूबी निभाया। (कृपया ये मत सोचिएगा कि मैं सिर्फ अपनी तारीफ कर रहा हूँ)

3-2 के अंत तक मैं BITSian जिंदगी से बोर हो गया था। मुझे बदलाव चाहिए था। इसलिए मैंने पहले सेमेस्टर में PS-2 लिया। Cypress Semiconductor,बैंगलौर जहाँ मैंने साढ़े पाँच महीने गुजारे और अब निकट भविष्य में वहीं JOB करने वाला हूँ। PS-2 के साथी बहुत अच्छे थे। कुछ वहाँ के दोस्त भी बनें, जिनके साथ मैंने जिंदगी के कुछ हसीन पल बिताए। बैंगलोर में घूमना, मूविज़, रूम में मस्ती, कंपनी का काम आदि सब का मैंने जो Experience पाया है, वो शब्दों में बयान नहीं कर सकता।

सन् 2007 - वो वर्ष जब मैं BITS में आखिरी सेमेस्टर गुजार रहा हूँ। कहने को तो यह 'Psenti-sem' है पर इसका अर्थ है - क्लास न जाना, क्रिकेट खेलना, Time Pass, लच्छे मारना और...और...कुछ नहीं करना। ही ही ही...। इस बार के Campus -Placement ने मेरा Give-Up करा दिया। PS की JOB नहीं होती तो शायद मैं क्या कर रहा होता। इतना तो पक्का था कि यह 'संस्मरण' नहीं लिख रहा होता।

एक समय था जब मैं सीनियर्स के पास जाकर उनसे 'संस्मरण' लिखने को बोलता था। आज मुझे खुद ये लिखने का अवसर मिला है। BITS में बिताया हर एक पल मुझे हमेशा याद रहेगा। BITS ने मुझे बहुत कुछ दिया, बहुत कुछ सिखाया है। फिलहाल तो मेरी जिंदगी 'प्रोफेशनल लाइफ' की ओर बढ़ रही है, परंतु मुझे नहीं पता कि भविष्य में क्या करूँगा- MBA या Civil Services, या यही लाइफ। मुझे फिर भी लगता है कि मेरी जिंदगी में किसी चीज की कमी है...पता नहीं वो मुझे मिलेगी या नहीं? पर एक चीज जरूर कहना चाहूँगा - "A person is not satisfied with what he has"

खैर काफी लिख दिया मैंने। शायद पहली बार HPC के लिए इतना लंबा लेख लिखा हो। ही ही ही। आप लोगों की भविष्य में तरक्की की कामना करता हूँ। अब मुझे इज़ाजत दिजिए.....

अलविदा,

Bbye, सायोनारा।

संजीव कुमार

पूर्ण विराम का महत्व

एक औरत अपने पति को पत्र लिखती है। डाक कुछ ही देर में जाने वाली होती है, उसने कहीं भी पूर्ण विराम नहीं लगाये होते हैं अत्एव वह जल्दी में पूर्ण विराम कहीं का कहीं लगा देती है उससे वाक्य का अर्थ किस तरह बदलता है देखिये : -

आपने चिठ्ठी नहीं लिखी मेरी प्यारी सहेली को। नौकरी मिल गयी हमारी गाय को। बछड़ा हुआ है बादाजी को। शराब पीने की आदत लग गई है मुझे। कितने ही पत्र लिखने पड़ गये पर तुम नहीं आये कुत्ते के बच्चे। भेड़िया खा गया है महीने की राशन की चीनी। छुट्टी होने के बाद ले आना एक खूबसूरत औरत। मेरी सहेली बन गयी है श्री देवी। अभी टी वी पर गाना गा रही है कुतिया। बेच दी है तुम्हारी माँ। सिर दर्द से परेशान थी कुतिया। पागल हो गयी थी जमीन। गेहूँ दे रही है ताऊजी के सिर में। सिकरी हो गयी पैर में। चोट लग गयी है तुम्हारी चिठ्ठी को। हर वक्त तरसती रहती हूँ।

जगती की शीतल हाला-सी, पथिक, नहीं मेरा प्याला,
पथिक, नहीं मेरी हाला, ज्वाल-सुरा जलते प्याले में
जगती के ठंडे प्याले-सा, दग्ध हृदय की कविता है;
जलने से भयभीत न जो हो, आए मेरी मधुशाला ।।

जागो

मैं एक विनम्र, सहमा परेशान इंसान
डगर डगर पर संभला
खुद में सिमटा, राह में भटका
दूर दुनियादारी से,
डूबा रात के अंधेरों में,
परवाह न सूखे की, न बारिश की
क्योंकि मैं था सब सुखों से परे,
एक झोंके में हिला दिया
उसके पंजे में इस तरह जकड़
तड़प-तड़प कर कहता रह गया,
जागो दूरदर्शी बनो
दृष्टि फैलाओ उन दुविधाओं पर
जो झंझोर देती है इन्सानियत को,
जब नन्हें शिशुओं के कंकाल निकलते हैं
दबी मिट्टी में
दूर नहीं इंसान जब समूह संसार होगी शमशान।।

संगीता शर्मा

एक प्रतिबिम्ब

जिसे मैं अक्सर बन्द आँखों से देख लिया करता था
डर कर यूँ आँखें खोल लिया करता था
फिर प्रत्यक्ष उसे ही पाया करता था,
आज ढूँढने पर भी जब न मिला
तो पल भर को घबरा उठा,
आँखें मूँदीं आँखें खोलीं
वह कहीं न मिला, जाने कहाँ खो गया,
फिर खुद से ही पहेली सी बूझने लगा
वह था कौन कि यूँ विचलित हुआ मन
पानी में झाँकूं तो प्रत्यक्ष
एक प्रतिबिम्ब मात्र,
खो गया सो शोक करूँ,
उसका तो अस्तित्व भी न था
कण से सूक्ष्म, रेखा सा विरल
जल में समा जाये, प्रतिबिम्ब ही तो था।

-कुणाल गुप्ता

जिन्दगी का सफर

सफर ये जिन्दगी का भरा है मुश्किलों से,
ऐ यार कहीं तू इसमें थक के रुक न जाना।।
कभी पैदल, कभी सवारी, कभी भरे, कभी खाली,
तय करना हो जैसे भी, तू चलते जाना।।
कहीं तू उनसे हार न जाना।।
सफर ये जिन्दगी का भरा है मुश्किलों से,
ऐ यार कहीं तू इसमें थक के रुक न जाना।।
चाहे माँ-बाप, चाहे शिक्षक,
चाहे रक्षक, चाहे भक्षक,
सीख ले तू सबसे उनकी अच्छाईयाँ।।
दुनिया यह भरी है बुराइयों से,
कहीं तू उनसे हार न जाना।।
सफर ये जिन्दगी का भरा है मुश्किलों से,
ऐ यार कहीं तू इसमें थक के रुक न जाना।।
जिन्दगी के इस खेल को तू खेल ले,
इस रंग बिरंगे सिनेमा को तू देख ले।।
इस खेल का अकेला खिलाड़ी तू,
इस फिल्म का अकेला हीरो तू,
बस दिल में यह रखकर तुझे जिन्दगी है जीना।।
सफर ये जिन्दगी का भरा है मुश्किलों से,
ऐ यार कहीं तू इसमें थक के रुक न जाना।।

सिद्धार्थ शंकर साहू
2005A2PS389

"COMPRE" एक प्रताड़ना

पिछले घंटे ही, कुछ हमने हालत सम्भाली हमारी है,
"तेरहवीं" में तू भी खा लेना, मुआ Compre पड़ा कुछ भारी है।
कुछ ऐसी वॉट लगी है यारों अब Suicide की पूरी तैयारी है,
बचना मेरा नामुमकिन है, Compre ने मार ऐसी मारी है।
"तेरहवीं" में तू भी खा लेना, मुआ Compre पड़ा कुछ भारी है।

दिन फूँके सारे Library में,
रातें nite-outs में गुजारी हैं।
बचना मेरा नामुमकिन है, Compre ने मार ऐसी मारी है,
"तेरहवीं" में तू भी खा लेना, मुआ Compre पड़ा कुछ भारी है।

इस भोले भाले चेहरे का, जब hostel में प्रवेश हुआ,
निकम्मेपन की बीमारी का, हमारा ये special case हुआ।
ANC जाने के लिए, रात 1 बजने का इंतजार किया,
Mid sem की मेरी हालत ने सारा program बेकार किया।
member of DOGS बनने के
member of DOGS बनने के
मेरे सपने में जब आग लगी,
तब ही एक बार फिर कहीं, अन्तर-आत्मा की थी आँख लगी।
कहीं दूर गंगा किनारे जा सो गई अन्तर-आत्मा हमारी है,
बचना मेरा नामुमकिन है, Compre ने मार ऐसी मारी है।
"तेरहवीं" में तू भी खा लेना, मुआ Compre पड़ा कुछ भारी है।

एक बार जब गलती से pre-comp पर मैंने गौर किया,
आवाज आई कहीं अंदर से -
"क्या रे, निखट्टू तूने यूँ हीं A बनने का शोर किया"।
नींदें खुलती थीं मेरी अब gtalk की वॉइस मेलों से,
नन्हा दिल फिर भटक गया, chatting की इन रंग-रैलियों से।
acads के औंधे मुह गिरने में gtalk की भी भागीदारी है,
बचना मेरा नामुमकिन है Compre ने मार ऐसी मारी है।
"तेरहवीं" में तू भी खा लेना, मुआ Compre पड़ा कुछ भारी है।

Scrap करने की हर निकम्मे को लगी एक नयी बीमारी है,
Orkut block हुआ तो क्या हुआ proxies की list काफी लंबी सारी है।
Gensec और Prez भी सर पीट चुके,
Gensec और Prez भी सर पीट चुके,
बस Orkuting ही TP हमारी है,
तो हालत कुछ यूँ है-
मैय्यत मेरी बिठवाने में Orkut की मेहनत सारी है।
"तेरहवीं" में तू भी खा लेना, मुआ Compre पड़ा कुछ भारी है।

Lite ले कह-कह कर जिन फंडों को Gen में हमने ignore किया,
उन निक्म्मों की पूरी पलटन ने हमें 3 घंटे भर बोर किया।
एक प्रण लिया था पहले दिन फोड़ा-फाड़ी कर डालेंगे,
अब बीच भंवर में यूँ फँसे हैं की हालत पतली हमारी है।
बचना मेरा नामुमकिन है, Compre ने मार ऐसी मारी है,
"तेरहवीं" में तू भी खा लेना, मुआ Compre पड़ा कुछ भारी है।

अब तो किताबें भी खुलने में नखरा करती थीं,
कहीं उन पर ही न सर पटक दूँ मैं, ये सोचकर वे भी डरती थीं।
समझा बुझाकर फिर एक दिन शुभ मुहूर्त में मैं बैठ गया,
जब course की सीमा मांपी मैंने, कलेजा अंतड़ियों में जा ऐंठ गया।
उसको धड़काने में फिर gtalk ने मेरा काम किया,
और यूँ ही chatting world में हमने अपना नाम किया।
यहीं नहीं खत्म हुआ प्रताड़न,
यहीं नहीं खत्म हुआ प्रताड़न,
ये कहानी बड़ी हालात-ए-दुसवारी है,
मैय्यत मेरी बिठवाने में नादान दिल ने भी बाजी मारी है।
"तेरहवीं" में तू भी खा लेना, मुआ Compre पड़ा कुछ भारी है।

मनीष पुरोहित

प्यार इसे कहते हैं

महफिल में मुलाकात उनसे कुछ इस प्रकार हुई।
दिन गुजरे तन्हाई में ओर रातें बेजार हो गयी।।

महफिल में जब उन्हें देखा तो न रोटी भाती है न पसंद आती है दाल
हम तो बस देखते ही रह गये उनकी कातर निगाह और मदहोशी भरी वो चाल।।

हमें तो पता ही नहीं चला हम उनसे जुदा हो गये।
वो उनकी मासूमियत ही तो थी जिस पर हम फिदा हो गए।।

तुम क्या जानो, तुम क्या जानो प्यार किसे कहते हैं ।
कभी खुदा की इबादत की होती तो पता होता कि प्यार इसे ही कहते हैं।।

कौन कहता है कि प्यार पूरा होता है
प्यार का पहला अक्षर ही अधूरा होता है।।
कौन कहता है कि प्यार अधूरा होता है
प्यार का वही आधा अक्षर ही तो प्यार को पूरा करता है।।

मयंक कुमार अग्रवाल

दोस्ती

पहलू है जिंदगी का ये सबसे खूबसूरत,
अनोखी ही होती है, जिसकी हकीकत।
कहने से नहीं बनता है ये रिश्ता,
बढ़ता है ये आहिस्ता-आहिस्ता।
सब कुछ पाकर भी क्या है उसके पास?
जिंदगी में जिसके दोस्त नहीं कोई खास।
ये तो है वह सुन्दर सा अहसास,
जिसके नाम में ही होती है कितनी मिठास।
दोस्ती से गिरता जीवन संभल जाता है,
दोस्ती से इंसान सच्चे साँचे में ढल जाता है।
दोस्ती से खुशी भरा सपना आँखों में पल जाता है,
दोस्ती में न गुजरता कल और न ही कभी कल आता है।
दोस्ती रिश्तों का मतलब समझाता है,
और फिर उन रिश्तों को निभाना सिखाता है।
दोस्ती शब्दों का साथ कहाँ पाता है,
बस दोस्ती का न होना आँखों में नमी लाता है।
दोस्ती दोस्ती दोस्ती
कौन जाने यह नाम किसने बताया होगा,
जरूर आँखों में आँसू देखे होंगे किसी के
तभी उसने पहला दोस्त बनाया होगा।।

प्रज्ञा लाड

गम-ए-जुदाई

घर लौटने की जब बात हुई,
तो उसमे भी बात कुछ खास हुई।
बस अब सब कुछ कह डालूँगा मैं,
इस बेवकूफ दिल को ये आस हुई।

अब क्या था------
बस करके तैयार खुद को रण के लिए,
मैं भी बस के निकट जा अटक गया।
उसके हुस्न का कुछ ऐसा अंदाज था कि,
मुनि मन का ध्यान फिर भटक गया।

अफरा तफरी हो गई इस इलाके में
अफरा तफरी हो गई इस इलाके में
कलेजा जगह छोड़ कर अब भाग रहा।

नक्शे भी जब पता भूल चुके तब,
हमको क्या खुद का ठिकाना खाक रहा।

क्या कहने मैं यहाँ आया हूँ,
और क्या सुनकर मुझको जाना था।
मैंने "बहन जी" उसको कह दिया,
जिसको "प्रिया" मुझे बनाना था।

लड़की से बिछड़ने के गम को हमने,
यारों की जुदाई में घोल दिया।
आँखों में आँसू ये तेरे लिये हैं,
बस यारों को ये बोल दिया।
बस यारों को ये बोल दिया।

मनीष पुरोहित

"कबूतर से संदेश भेजते हैं शाहजहाँ और मुमताज,
शाहजहाँ भेज देता है खाली कबूतर आज,
पूछ बैठती है मुमताज क्या है खाली कबूतर का राज,
शाहजहाँ कहता है ये मिसकॉल है मेरी मुमताज।।"

गंगाजल

मेरी कोशिश है कि मैं बदलूँ,
रेत घुले पानी की तरह ठहरूँ,
और निथर जाऊँ।
आज की इस धुंधली बयार को छोड़ूँ,
और निखर जाऊँ।
मैं एक घाट का पानी
जाने कितने टीलों का रेत
और खेतों की मिट्टी से
गुजरकर बह रहा हूँ।
या बहने की कोशिश कर रहा हूँ,
नहीं जानता।
कितना धुआँ और धुंध लिए
ये हवा चल रही है
और मुझमें घुल रही है,
रेत बैठने लगी तो समीर आई।
हालात वही
कुआँ खुद गया पर नीचे
भरी पूरी खाई।
यह अकारण नहीं,
उसका सरोकार है मुझसे,
मैं समाज का एक
खामोश पुर्ज़ा हूँ।
और वो हवा सामाजिक है।
अब मैं बदलूँगा, निखरूँगा,
निथरूँगा
क्योंकि मैं पानी हूँ।
सोचो तो मैं अमृत,
मानो तो गरल भी हूँ।
चारों ओर बहता शासक घना,
लेकिन मैं विरल भी हूँ।
नाली में कहकशाँ है मेरा,
पर मैं गंगाजल भी हूँ।

रोबिन कुमार

गीत

मैं उनके लिए गीत लिखता हूँ यारों
जमाने ने जिन पर सितम हैं किए।
बुझे जिनके अरमानों के दिए।
वो मजदूर जिसने इमारत बनाई मगर,
हिस्से में खोली तक भी न आई
उसे उसका हक, भला कौन देता
जो रोटी भी माँगी तो फटकार खाई
और कह न सका कुछ भी अपनी जुबाँ से
जिसे ठोकर ही मिली हैं जहाँ से
मैं उनके लिए गीत लिखता हूँ यारों
जमाने ने जिन पर सितम हैं किए।
बुझे जिनके अरमानों के दिए।।

मुझे याद आ जाती है उस बहन की
हुई दफन इच्छाएं जिसके मन में ही मन की
किस्मत ने खिलवाड़ ऐसा किया कि
न पायल ही छनकी न चूड़ी ही खनकी
न बारात आई न डोली सजी है
यूँ बनने को हर रात दुल्हन बनी है
मैं उनके लिए गीत लिखता हूँ यारों
जमाने ने जिन पर सितम हैं किए
बुझे जिनके अरमानों के दिए।

जो बैठें हुए हैं खरीददार बनके
हर एक ओर मज़हब में दीवार बनके
कि चुभते हैं नस नस में जो खार बनके
ये जोंके हैं जो बदन नोचती हैं; लहू चूसती हैं
किया न किसी ने जो ये काम कर दें
खुदा भी मिले; तो ये नीलाम कर दें
मैं उनके लिए गीत लिखता हूँ यारों
जमाने ने जिन पर सितम हैं किए
बुझे जिनके अरमानों के दिए।

नवनीत खन्ना

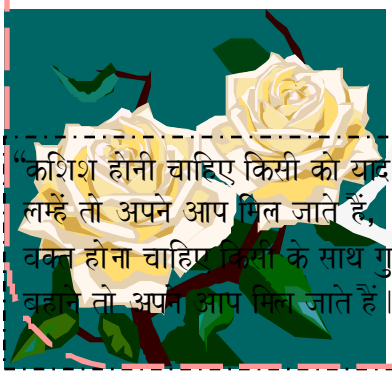

"कोशिश होनी चाहिए किसी को याद करने की,
लम्हें तो अपने आप मिल जाते हैं,
वक्त होना चाहिए किसी के साथ गुजारने के लिए,
बहाने तो अपने आप मिल जाते हैं।
साथ रहते रहते यूँ ही वक्त गुजर जाएगा,
दूर होने के बाद कौन किसे याद आएगा,
जी लो हर पल जब हम साथ हैं,
कल का क्या पता वक्त कहाँ ले जाएगा।।"

कल आज और कल

मेरी जब थी आँख खुली
माँ थी जंजीरों में जकड़ी हुई।
अंग्रेजों ने थी नींव जमाई
नींव जो अत्याचार पर टिकी,
अन्याय का सहारा लिये।

लाखों ने थी जान गँवाई
कितनों ने बंदूक उठाई,
घर थे उजड़े परिवार भी बिखरे,
सबकी साँसे थम गई,
सरिताओं में था खून भरा।
भावनाओं का सागर था बहा।

जो आँख उठी, फिर देख न सकी,
जो कदम बढा, कुचला गया
जो भूख लगी, वो खुद मिट गयी,
जो आवाज उठी, वो फिर न सुनी,
ज्यों हवा का झोंका, वैसी ही खुशी,
इक पल आयी फिर चली गयी।
इक पल आयी फिर चली गयी।

अंग्रेजों के पैरों तले जिया,
हर व्यक्ति तब गुलाम बना,
न आजादी न सम्मान,
खतरे में थी माँ की शान,
फिर क्या कीमती थे अपने प्राण ?

पहाड़ सा जोश, उमंग भरा दिल,
आजादी सबकी यही मंजिल,
माँ की शान पर न्यौछावर हुए प्राण,
सींच लिया माँ का सम्मान,
कुचला, अंग्रेजों का सम्मान,
कुचला, अंग्रेजों का अभिमान।

दौड़ गई विद्रोह की लहर,
भारत में सर्वत्र गदर मचा,
हर माँ ने मन पक्का किया,
बेटे ने भय से नाता तोड़ दिया,
न पीछे हटने का प्रण किया।

फिर न कदम रूके ना आँख झुकी,
आवाज उठी तो बुलंद हुई,
प्यास लगी तो अवश्य बुझी,
जो उँगली उठी, फिर मुट्ठी बनी।
जो उँगली उठी, फिर मुट्ठी बनी।

बाग-बाग में फूल खिले,
पक्षियों नें भी छेड़े राग,
पानी बरसा, सरसों लहराई,
खुशी का झोंका, यहाँ ठहर गया,
इक दौर नया भारत में छाया,
नौजवानों ने जो कदम बढाया।

आज जब मैं बड़ा हूँ
माँ को जकड़ा फिर पाता हूँ
यह वह सोने की चिड़िया नहीं
बापू का सपना टूट गया,
भारत अब वो भारत न रहा।
भारत अब वो भारत न रहा।

अंग्रेजों को मैं कैसे दोष दूँ?
जब स्वयं यह देखता हूँ,
भारतीय रूपये को सदा पूजता है,
लोभ स्वार्थ का घोल सदा,
वह जल समझकर पीता है।
वह जल समझकर पीता है।

रोम रोम में फरेब बसा,
मित्रों से है तोड़ा नाता,
सदा निभाये शत्रुता,
दाँव पर दूसरे के प्राण,
बढाता जाए वह अपना मान।
बढाता जाए वह अपना मान।

माँ को माना धरती मात्र,
स्वयं पेट भर लिया
औरों को वह भूल गया,
भारतीय आज स्वार्थी बना।
भारतीय आज स्वार्थी बना।

दीपांशु सैनी

हर सिक्के के दो पहलू

आता हर कोई इस जग में,
होकर लहू से लथ पथ।
फिर कर सकता है दुष्कर्म
या चले सत्य का अग्नि पथ।
देवों का बन सकता है काँधा,
या बढ़ाये पापों का रथ।
यह निश्चय है मानव पर ही,
यही है मेरा चिर मत।
नव प्रभात का उज्ज्वल सूरज ही फैलाता है अंधकार।
हर सिक्के के दो पहलू हैं, हर सिक्के के दो पहलू।।

कर्म करना ही प्रथम है,
फल तो उसके द्वंद्व है।
देते किसी को मन माँगा,
तो देते किसी को रंक हैं।
श्रम ही सर्वप्रथम सिक्का है,
चाहे मानो ना मानो।
उछाले उसे ईश ही,
और ईश ही उसे सम्भाले।
तो पूछो क्या फल है श्रम का,
तो उत्तर यूँ प्रस्तुत है -
श्रम ही कारण और श्रम ही लक्ष्य,
और जीवन शत-प्रतिशत है।
श्रम नहीं है खोटा सिक्का,
यह सत्य तो अटल है।
क्योंकि यह सिक्का ही देता,
जीवन को कुछ अर्थ है।
तो करो जम के परिश्रम,
जीवन बड़ा ही अल्प है।
फल की चिन्ता क्या करते हो,
चिन्तन करना व्यर्थ है।
क्योंकि श्रम ही वश में है हमारे,
फल तो फिर भविष्य है।
हर सिक्के के दो पहलू है, हर सिक्के के दो पहलू।।

श्रम और लक्ष्य यह दो ही तो,
इस संसार के सिक्के हैं।
पहलू इनका जो भी हो,
फल दोनो के अच्छे हैं;
चरित्र के पारखी सच्चे हैं।।
हर सिक्के के दो पहलू हैं, हर सिक्के के दो पहलू।।

अनमोल

पथगामी

एक कसक कुछ पाने की
सिमटी सी है पर
पार कर रही है कसौटियाँ
अगणित।

कभी अटकी किनारे पर
कभी हिला गया तूफान कोई
कभी मिल गया अस्तित्व को
स्वच्छन्द नाँव का साथ
कभी डुबो दिया खुद माँझी ने।

क्या है वह मंजिल
इस कदर जरूरी
पर हर एक मंजर
एक बात कहकर गया
चलते जाना ही है जिन्दगी
मंजिल तो आखिर है उसकी
जो कसौटियाँ लाँघकर चले।

सुशीला राठौर
लेक्चरर

कौन है अपना कौन पराया

अजब रंग ढंग की ये दुनिया
कौन है अपना
कौन पराया
समझ में जिसके यह न आया
बदल गयी उसकी काया
हाथ न उसके कुछ आया
अपनेपन से उम्मीदों का सफर
मैं न कभी तय कर पाया
दर्शाया दुनिया ने परायापन
देख जिसे हो गया
मैं तो दंग
पोथी-शास्त्र सभी ने पढ़ाया
समता का भाव
पर जिसका दर्श कभी न पाया
क्यों कर आदेश की बातें
उलझाते है लोग
जिगर लहूलुहान कर
चल देते हैं लोग
अजब रंग ढंग की ये दुनिया
कौन है अपना
कौन पराया

डॉ. पुष्पलता
असिस्टेंट प्रोफेसर

आरक्षण

हमारे देश भारत में आरक्षण की बहार आयी है।
I.I.T, I.I.M जैसे उच्च संस्थानों पर काली घटा छायी है।।
अब शिक्षा में भी लॉटरी लगने की बारी आयी है।
हमारी सरकार अलादीन का चिराग लायी है।।
देश के विकसित होने की राह में एक बार फिर बाढ़ आयी है।
अब तो मेधावी छात्रों के डूबने की बारी आयी है।।
देश के धूर्त नेताओं ने वोट-बैंक बढ़ाने की नीति अपनायी है।
गधे एंव घोड़ों को इंजीनियर व डॉक्टर बनाने की नीति चलायी है।।
हमारे देश भारत में आरक्षण की बहार आयी है।
न जाने और कितने संस्थानों ने आबरु लूटाने की सजा पायी है।।
अब्दुल कलाम के "2020 विकसित भारत" सपने के टूटने की नौबत आयी है।

"विकास स्वरूपी शताब्दी ट्रेन" की पटरी से उतरने की चिंता गहराई है।।
देश के बड़े-बड़े नेताओं की बुद्धापे में आकर बुद्धि सठियाई है।
जो तकनीकी शिक्षा भी नमक के भाव बेच खायी है।।
अब सोच लो तुम भी फैसला करने की घड़ी नज़दीक आयी है।
न चाहते हुए भी आज फिर एक बार लड़ने की बारी आयी है।।

ललित कुमार

अग्निशिखा

एक लपट उठी थी धरती के गर्भ से
आकाश को छू कर बरस पड़ी बूंदों में
सोख लीं वही बूंदें धरा ने
आया बसन्त तो
जन्म दिया पलाश के जलते फूलों को
एक बूंद अभागी
बरसी तो आकाश से
मगर न मिली धरा से
लिये अपना ज्वलन्त अस्तित्व
भटकी हवा में
कभी जलती दिये में
कभी बहती लहर में
जुगनू सी जलती बुझती बूंद
एक रात के चौथे प्रहर में
स्वाति नक्षत्र में
एक प्यासे चातक ने
मुख खोला ही था
बूंद के लाख मना करने पर भी
पी गया वह तृषित सा
जलती बूंद उतारता कैसे कंठ से?
जीवन भर
सुलगती रही बूंद अग्निशिखा सी
चातक के हृदय में !

निरूपम आनंद

मैं एक औरत हूँ

मैं एक औरत हूँ
दुर्गा सिर्फ पुराणों में वास्तव में अबला हूँ।
दुःखों को सहकर जो आह भी न करे
मैं वो निर्जीव हूँ।
पति मेरा आभूषण है और
शब्दकोश बताता है वह है मेरा ईश्वर !
अस्तित्व नहीं बिना उसके मेरा समाज में।
खिड़की की सलाखें पकडे इंतजार में रोना
आँसूओं से आटा गूँथकर रोटियाँ बनाना
यह है मेरा धर्म।
आजीवन देती रहूँ सतीत्व का प्रमाण
पर सतीत्व किसे कहते हैं ?
मैं इसकी संज्ञा चाहती हूँ
कहाँ रहता है सतीत्व?
शरीर के किस अंग में बसता है?
क्या है मेरा दोष जो रह गया
सिर्फ जूठन और दर्द मेरे हिस्से में
जीना चाहूँ जिंदगी तो मैं हूँ
एक वैश्या तवायफ
थोड़े में खुश हो गई इसका अर्थ यह नहीं
कि छोड़े और फेंके के सिवा कुछ अच्छा न लगे
पत्थर पाकर खुश हो जाऊँ तो यह नहीं
हीरे की पहचान नहीं।
विनम्र हूँ पर यह नहीं कि दुःख सहती जाऊँ
पर कर भी नहीं सकती कुछ
इस पुरुष प्रधान समाज में क्योंकि
मैं एक औरत हूँ।

सुनील कुमार शर्मा

पिचकारी

"आसूँओ को बहुत समझाया कि तनहाई में आया करो,
महफिल में इस तरह हमारा मजाक न बनाया करो,
तो इस पर आँसू तड़प के बोले
आप को महफिल में भी तन्हा पाते हैं,
इसलिए चले आते हैं"

"लैला को मजनू का SMS नहीं आया,
उसने तीन दिन तक खाना नहीं खाया,
वो मरने वाली है मजनू के प्यार में
और मजनू बैठा है SMS free होने के इंतजार में"

न गया

आस्था या विश्वास,
जीवन या इतिहास,
पैमाने से मापा न गया।

आशा, इच्छा
अनादर, प्यास
जबरन हाँका न गया।

न थी पहचान
पैमाने से
सो मापदण्ड रखा न गया।

अभाव निराशा
आए गए
जीवन का लेखा रखा न गया।

खुशियाँ दामन से लिपटी रहीं
रास्ता ही मंजिल रहा
मंजिल को मुकाम बनाया न गया।

देविका

जीवन

जब हवाएं उसको पूरा लूट चुकी थी,
तब मैंने उससे पूछा था कि
क्या तुम्हें इन हवाओं से कोई शिकायत नहीं होती
मैंने देखा था जब तुम्हारे एक-एक फूल को
हवाएँ गिरा रही थीं तब तुम चुप थे।
जब नीड़ के पंछी तुम्हें छोड़कर जा रहे थे
तुम तब भी चुप थे।
उसने चुपके से कहा ऐसा नहीं कि
जब पंछी मुझे छोड़ कर जाते हैं तो
मुझे दर्द नहीं होता।
पर मैं उनकी आँखों में अपने लिए प्रेम देखकर हो जाता हूँ चुप
अपने रोने के स्वरों से मैं कहीं दूर से आने वाली
पंछियों के गीत की मंद ध्वनि को दबाना नहीं चाहता
और इस मंद मधुर गीत को गुनगुनाता हुआ
यादें बचा कर रखता हूँ, खुल कर हँसने गाने गुनगुनाने की
मेरे लिए पतझड़ जीवन का अंत नहीं
आगामी बसंत की तैयारी है।

आलोक जैन

जीवन की इकाई

अड़ी शिद्दत से जब याद तेरी आती है,
ओस की बूँदों की तरह आँखों में नमीं छोड़ जाती है।
तेरे ख्वाब जो मेरे अँधियारे जीवन में रोशनी लाते हैं,
बिखरे पन्नों की तरह, भोर में बिखर जाते हैं।।
तेरा एहसास जो मुझे अतीत में ले जाता है,
मदहोश भौंरे की तरह पागल मुझे बनाता है।
तेरी बातें जो अक्सर मुझे हँसाती हैं,
जाने क्यूँ आजकल होंठों पे ठहर जाती है।।
क्यूँ जीवन शांत, बेगाना सा हो गया है,
मेरा अक्स मुझी से अंजाना सा हो गया है।
क्यूँ बेचैन है शमां, तन्हाई सी छाई है,
मन में बसी, बस तेरी ही परछाई है।।
शायद.....
मगरूर नहीं मैं, मजबूर हो गया हूँ,
जीवन की इकाई से, मैं दूर हो गया हूँ।।

श्रवण यादव

जिन्दगी

रोने से तकदीर बदलती नहीं है,
वक्त से पहले रात भी ढ़लती नहीं है।
दूसरों की कामयाबी लगती आसान मगर,
कामयाबी रास्ते में पड़ी मिलती नहीं है।
मिल जाती कामयाबी अगर इत्तेफाक से,
ये भी सच है कि वो पचती नहीं है।
कामयाबी पाना है पानी में आग लगाना,
पानी में आग आसानी से लगती नहीं है।
ऐसा भी लगता है जिन्दगी में अक्सर,
दुनियाँ अपने जज्बात समझती नहीं है।
हर शिकायत के बाद टूटकर जो संभल गया,
फिर कौन सी बिगड़ी बात बनती नहीं है।
हाथ बाँध कर बैठने से पहले सोच ऐ दोस्त,
अपने आप कोई जिन्दगी सँवरती नहीं है।

पुष्प सौरभ

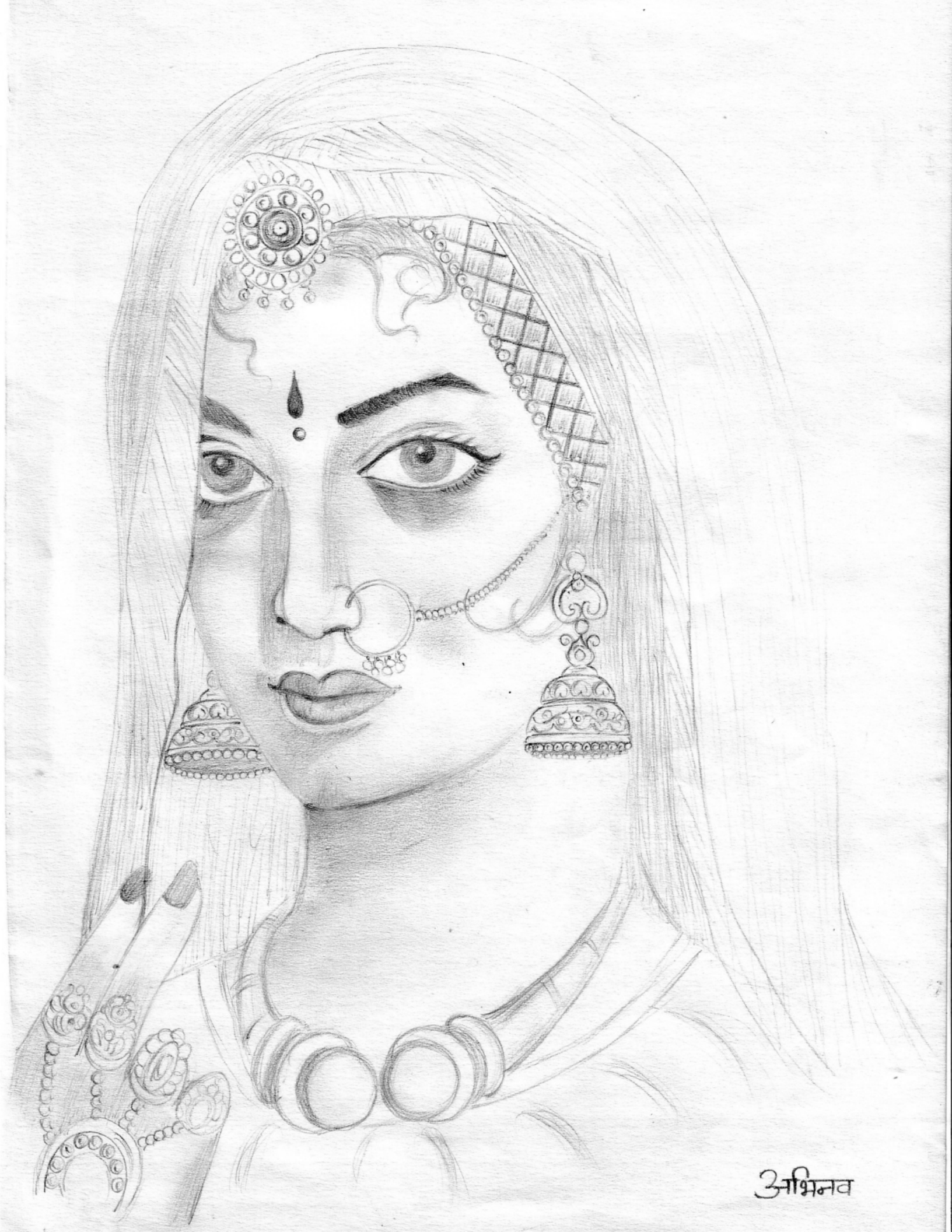
अभिनव

हमारा परिवार ः

आलोक, अरूण,
विक्की, राकेश, स्नेहिल, प्रगति
निरूपम, राज शेखर, सुषमित, सुरभि, उज्जवल, अभिराज, अवनीश, विवेक
भावेश झा, पुष्प, शैलेश, रवि, सुभ्रोज्योति, रितुराज, अभिनव, मृत्युंजय, नित्य, प्रिंस, चिनमय, ललित, महिम, अनमोल, विकल्प, रितु, सुमन, प्रिया, अनुभा, प्रतीक, प्रतीक माहेश्वरी, हिमांशु, अंकित भावेश श्रीवास्तव, हितेश।

आभार ः

संजीव, कुणाल, शशाँक, रिखाड़ी, राणा, विशाल, आलोक, सुरूचि, हर्षा, अर्पित, पाठक, मोहन, निधि, शालू, नन्दन, रितुल।

विशेष आभार ः

श्रीमती लीला रानी, डॉ0 पुष्पलता, राजीव रंजन सिंह, दिनेश कुमार, डॉ0 संगीता शर्मा, निखिल प्रकाश सक्सेना, सुशील कुमार, सुशीला राठौर ।

उदघोषणा ः

वाणी एक परिसर पत्रिका है, जो केवल बिद्यावासियों के लिए प्रकाशित की जाती है। इसका किसी भी प्रकार से क्रय विक्रय पूर्णतया अवैध है। दोषी पाये जाने पर उचित कार्यवाही की जायेगी।